संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-23 अंक- 65
पृष्ठ 8
रविवार
22 नवम्बर 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- उम्र के हिसाब से फॉलो करना...

विचार- आधुनिक भारत और नेहरू, गांधी...

खेल- सूर्यकुमार की वापसी के रास्ते बंद!

पीएम मोदी ने नीतीश सेतु का उद्घाटन किया, गमछा लहराया, कहा

जिस बिहार में घोटालों की गिनती होती थी, वहां अब निवेश के आंकड़े आते हैं

हाजीपुर/पटना (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को बिहार के वैशाली में गंगा नदी पर बने कच्ची दरगाह–बिदुपुर सिक्स लेन पुल का उद्घाटन किया। ब्रिज का नाम बिहार के पूर्व सीएम नीतीश कुमार के नाम पर 'नीतीश सेतु' रखा गया है।

पीएम मोदी ने उद्घाटन से पहले पूर्व सीएम नीतीश कुमार को गले लगाया। उद्घाटन के बाद पुल पर टहलते हुए गमछा लहराया। पीएम मोदी ने कहा– एनडीए की सरकार से पहले बिहार में घोटालों की गितनी होती थी। अब यहां निवेश के आंकड़े गिने जा रहे हैं।

पीएम मोदी ने अपने 16 मिनट के भाषण में कहा– गंगा मैया पर बने इस पुल का नाम नीतीश जी के सम्मान में रखा गया है। ये उनकी सेवा समर्पण के सम्मान का प्रतीक है।

करीब तीन दशक पहले बिहार ने उम्मीद, विश्वास की



नई राह चुनी थी। जिस बिहार को दशकों तक बदहाली झेलनी पड़ी, उसे नीतीश जी के नेतृत्व में सुशासन का भरोसा मिला।

हमने गरीबों को उन्हें घर दिया, इलाज दिया, बिजली पानी पहुंचाकर करोड़ों गरीबों को सम्मानपूर्वक जीवन दिया। इसके कारण गरीब के अंदर आत्मविश्वास जगा।

गरीबी के खिलाफ अभियान में बिहार का बड़ा योगदान है। डबल इंजन सरकार ने मेहनत से काम किया। योजनाओं को घर तक पहुंचाया गया। बिहार में 43 लाख लोगों को पक्के मकान दिए गए।

पीएम ने कहा– साफ नीयत से काम होता है तो नतीजे दिखते हैं। जिस देश में कांग्रेस गरीबी हटाओ के नारे लगाती रही। वहां 12 साल के भीतर 50 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकाला। यह सरकार की इच्छाशक्ति का परिणाम है।

देश गरीबी के खिलाफ लड़ाई इसलिए जीत रहा है, क्योंकि वे हमारी प्राथमिकता है।

पीएम मोदी ने रिमोट का बटन दबाकर 21 विभागों की 227 विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास भी किया। इन योजनाओं की लागत 34,470 करोड़ से ज्यादा है।

पीएम ने कहा– हमने गरीबों को उन्हें घर दिया, इलाज दिया, बिजली पानी पहुंचाकर करोड़ों गरीबों को सम्मानपूर्वक जीवन दिया। इसके कारण गरीब के अंदर आत्मविश्वास जगा।

गरीबी के खिलाफ अभियान में बिहार का बड़ा योगदान है। डबल इंजन सरकार ने मेहनत से काम किया। योजनाओं को घर तक पहुंचाया गया। बिहार में 43 लाख लोगों को पक्के मकान दिए गए।

बिहार के 75 लाख किसानों में हजारों करोड़ रुपए पीएम किसान सम्मान निधि के भेजे गए। हम हमें न रुकना है, न थकना है, एनडीए के सभी दलों को मिलकर समर्थ और आत्मनिर्भर भारत के लिए साथ काम करना है। पीएम ने कहा– साफ नीयत से काम होता है तो नतीजे दिखते हैं। जिस देश में कांग्रेस गरीबी हटाओ के नारे लगाती रही।

अरुणाचल में सियांग बांध परियोजना का विरोध, अमित शाह बोले

लोगों की चिंता दूर करेंगे

ईटानगर (एजेंसी)। आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है।श अमित शाह ने कहा कि मीडिया के जरिए भी उन्हें लोगों की समस्याओं के बारे में पता चला है और इनमें कई मुद्दे महत्वपूर्ण हैं।

अरुणाचल प्रदेश में 11,200 मेगावाट की प्रस्तावित बांध परियोजना को लेकर स्थानीय लोगों का विरोध जारी है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को सियांग घाटी के लोगों को भरोसा दिलाया कि उनकी चिंताओं का समाधान बातचीत से निकाला जाएगा। उन्होंने कहा कि परियोजना आगे बढ़ाते समय स्थानीय संस्कृति, परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं से समझौता नहीं होगा। अमित शाह ने प्रभावित लोगों के लिए देश के सबसे आकर्षक पुनर्वास पैकेजों में से एक देने का भी भरोसा दिया।

अरुणाचल प्रदेश के बंदरदेवा स्थित पुलिस ट्रेनिंग सेंटर में पुलिसकर्मियों को संबोधित करते हुए शाह ने कहा कि उन्हें सियांग क्षेत्र के लोगों की भावनाओं और आशंकाओं की जानकारी है। वह इन चिंताओं को सीधे सुनने और उनका समाधान करने के लिए अरुणाचल प्रदेश आए हैं। उन्होंने कहा, श्मैं सियांग के अपने भाई–बहनों को भरोसा देना चाहता हूं कि सकारात्मक बातचीत से हम आगे का रास्ता निकालेंगे।



अमित शाह ने साफ–साफ कहा कि परियोजना को आगे बढ़ाते समय स्थानीय लोगों की संस्कृति, परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं का पूरा सम्मान किया जाएगा। सरकार भी स्थानीय संस्कृति के प्रति उतना ही सम्मान रखती है, जितना वहां के लोगों का है। उन्होंने कहा कि इन परंपराओं से समझौता किए बिना ही आगे बढ़ा जाएगा। गृह मंत्री ने प्रभावित लोगों के लिए देश के सबसे आकर्षक पुनर्वास और पुनर्स्थापन पैकेजों में से एक देने का भरोसा भी

प्रस्तावित सियांग अपर मल्टीपर्पज प्रोजेक्ट (एसयूएमपी) को केंद्र सरकार राष्ट्रीय महत्व की परियोजना मानती है। इससे अरुणाचल प्रदेश के विकास, बिजली उत्पादन, राज्य की आय और देश की ऊर्जा व जल सुरक्षा को मजबूती मिलने की उम्मीद है। चीन की ओर से तिब्बत में यारलुंग त्सांगपो नदी के ऊपरी हिस्से में बड़े जलविद्युत प्रोजेक्ट की योजना भी इस परियोजना के रणनीतिक महत्व को बढ़ाती है। तिब्बत से भारत में प्रवेश करने वाली यही नदी सियांग कहलाती है और आगे असम में ब्रह्मपुत्र बन जाती है। सियांग और अपर सियांग जिलों के आदिवासी समुदाय, खासकर आदि समुदाय के लोग, प्रस्तावित बांध का विरोध कर रहे हैं।

मणिपुर में जहरीली शराब पीने से मचा हड़कंप

अबतक 13 की मौत, 300 से ज्यादा अस्पताल में भर्ती, कई की हालत गंभीर

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर के चंदेल जिले में 18 नवंबर को जहरीली शराब पीने के बाद से कम से कम 13 लोगों की मौत हो गई है और 300 से ज्यादा लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यह जानकारी पुलिस ने शनिवार को दी। मरीज मुख्य रूप से पहाड़ी जिले के



चकपिकारोंग और आसपास के इलाकों के रहने वाले हैं। इन्हें इंफाल के कई अस्पतालों – जैसे जेएनआईएमएस, आरआईएमएस, शिजा और बबीना – में भर्ती कराया गया है। एक अधिकारी ने समाचार एजेंसी पीटीआई को बताया, शुक्रवार रात 9 बजे तक 13 लोगों की मौत की खबर है, जबकि जहरीली शराब पीने के कारण मेथनॉल पॉइजनिंग के शक में 346 मरीजों को अस्पतालों में भर्ती कराया गया है।

यह हादसा नहीं, लापरवाही है

मणिपुर में जहरीली शराब से मौतों पर राहुल गांधी ने भाजपा को घेरा, क्या आरोप लगाए?

नई दिल्ली (एजेंसी)। मणिपुर में जहरीली शराब पीने से 15 लोगों की मौत के मामले ने राजनीतिक तूल पकड़ लिया है। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने इस घटना को लेकर राज्य की भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि जहरीली शराब से हुई मौतें कोई हादसा नहीं, बल्कि सरकार की लापरवाही का नतीजा हैं। राहुल ने आरोप लगाया कि मणिपुर पहले हिंसा की मार झेल चुका है और अब जहरीली शराब लोगों की जान ले रही है, लेकिन सरकार अब भी सो रही है। उन्होंने दोषियों के खिलाफ तत्काल सख्त कार्रवाई और पीड़ित परिवारों को उचित मुआवजा देने की मांग की है।

राहुल गांधी ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर जहरीली



शराब से हुई मौतों पर दुख जताया। उन्होंने मृतकों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की और अस्पताल में भर्ती मरीजों के जल्द स्वस्थ होने की कामना की। राहुल ने कहा कि यह घटना भाजपा सरकार की लापरवाही का नतीजा है।

उनके मुताबिक, पहले हिंसा ने सैकड़ों घरों को तबाह किया और अब जहरीली शराब लोगोंकी जिंदगी छीन रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि इतनी गंभीर घटना के बावजूद सरकार की ओर से जरूरी कदम नहीं उठाए जा रहे हैं।

कांग्रेस नेता ने मांग की कि जहरीली शराब के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ तुरंत और सख्त कार्रवाई की जाए। उन्होंने कहा कि प्रभावित परिवारों को बिना देरी पूरी सहायता और उचित मुआवजा मिलना चाहिए। राहुल ने अस्पतालों में भर्ती मरीजों के बेहतर इलाज और उनके जल्द स्वस्थ होने की उम्मीद भी जताई। उनका कहना है कि इस घटना के लिए जिम्मेदार लोगों को जवाबदेह बनाया जाना चाहिए।

चंदेल जिले के चकपी करोंग और आसपास के इलाकों में स्थानीय शराब पीने के बाद बड़ी संख्या में लोग बीमार पड़ गए। अब तक कम से कम 15 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है। करीब 150 मरीज इंफाल के शिजा अस्पताल में जांच और इलाज करा रहे हैं। इसके अलावा बाबिना अस्पताल में भी कई मरीज भर्ती हैं। आशंका जताई जा रही है कि स्थानीय शराब में जहरीला रसायन मेथनॉल मिला हुआ था। हालांकि, शराब कहां से आई और उसमें यह रसायन कैसे मिला, इसकी जांच जारी है। मुख्यमंत्री युमनाम खेमचंद सिंह ने शुक्रवार को शिजा और बाबिना अस्पताल पहुंचकर मरीजों का हाल जाना।

नवम्बर माह का सावित्री देवी स्मृति सम्मान शहर समता महिला काव्यगोष्ठी कानपुर इकाई की सुषमा सिंह उर्मि को दिया जाएगा

प्रयागराज । हर माह मिलने वाला सावित्री देवी स्मृति सम्मान नवम्बर 2026 का शहर समता महिला काव्यगोष्ठी कानपुर इकाई की आदरणीया सुषमा सिंह उर्मि जी को दिया जाएगा। रचनाकार सुषमा सिंह उर्मिजी पर चार पेज का सावित्री देवी स्मृति सम्मान विशेषांक भी प्रकाशित होगा, जिसमें रचनाकार को 30–35 कविताएं, कहानी, अपना जीवनवृत्त और अपना आत्मसंघर्ष टाइप करके देना पड़ेगा। साथ में एक पोस्ट कार्ड साइज की फोटो भी।



सिखों की भावनाएं आहत

नई दिल्ली (एजेंसी)। वरिष्ठ कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने शनिवार को बिहार के शकच्ची दरगाह–बिदुपुरश छह–लेन पुल का नाम सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह के बजाय जनता दल (यूनाइटेड) नेता नीतीश कुमार के नाम पर श्नीतीश सेतुश रखने के फैसले पर सवाल उठाए। एक्स पर एक पोस्ट में, खेड़ा ने राज्य सरकार की आलोचना की।

PRESS
हमेशा आपके साथ

दैनिक एवं साप्ताहिक हिंदी समाचार पत्र

शहर समता
संयम ★ संस्कार ★ संतुलन

Website
www.shaharsamta.com

Subscribe on YouTube
youtube.com/@shaharsamtanews

सही खबर, सही समय पर

स्थापित 2001 • RNI Dainik UPHIN/2004/22466 • साप्ताहिक UPHIN/2001/03996 • कार्यालय 289/238 A कर्नलगंज प्रयागराज • संपर्क 9005239332, 9450482227

उपभोक्ता आयोग: गलत जानकारी देकर बीमा करने पर कंपनी को लौटाना होगा 4.86 लाख

प्रयागराज। जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग ने गलत जानकारी देकर बीमा पॉलिसी बेचने के मामले में इंडिया फर्स्ट लाइफ इंश्योरेंस कंपनी को सेवा में कमी का दोषी माना है। जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग ने गलत जानकारी देकर बीमा पॉलिसी बेचने के मामले में इंडिया फर्स्ट लाइफ इंश्योरेंस कंपनी को सेवा में कमी का दोषी माना है। आयोग ने कंपनी को शिकायतकर्ता पूनम श्रीवास्तव को जमा किए गए पांच प्रीमियम



की कुल 4,86,604 रुपये की रकम आठ प्रतिशत वार्षिक ब्याज के साथ लौटाने का आदेश दिया है। साथ ही 10 हजार रुपये मानसिक एवं आर्थिक क्षतिपूर्ति और पांच हजार रुपये मुकदमे के खर्च के रूप में देने को कहा है।

आयोग के अध्यक्ष मोहम्मद इब्राहिम और सदस्य प्रकाश चंद्र त्रिपाठी की पीठ ने यह फैसला सुनाया। शिकायतकर्ता का आरोप था कि बीमा एजेंट ने उन्हें पांच लाख रुपये एकमुश्त जमा करने पर पांच साल बाद परिपक्वता राशि मिलने की जानकारी दी थी लेकिन उनकी जानकारी और सहमति के बिना दूसरी योजना की पॉलिसी जारी कर दी गई। इसमें हर साल एक लाख रुपये प्रीमियम जमा करना था। कंपनी ने बचाव में कहा कि पॉलिसी जारी होने के बाद उसे रद्द कराने के लिए 15 दिन का समय दिया गया था जिसका शिकायतकर्ता ने इस्तेमाल नहीं किया। आयोग ने इस दलील को स्वीकार नहीं किया। कंपनी को आदेश के दो महीने के भीतर भुगतान करना होगा।

दूसरे राज्य में 16 किमी तक बस संचालन के लिए मंजूरी जरूरी नहीं, परमिट की संख्या पर सहमति ही पर्याप्त

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि 16 किलोमीटर तक दूसरे राज्य में बस जाने पर वहां के परिवहन विभाग की मंजूरी जरूरी नहीं है। न ही फ्री कॉरिडोर मार्ग पर बस संचालन के लिए संबंधित मार्ग का दोनों राज्यों के बीच हुए परिवहन समझौते में शामिल होना अनिवार्य है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि 16 किलोमीटर तक दूसरे राज्य में बस जाने पर वहां के परिवहन विभाग की मंजूरी जरूरी नहीं है। न ही फ्री कॉरिडोर मार्ग पर बस संचालन के लिए संबंधित मार्ग का दोनों राज्यों के बीच हुए परिवहन समझौते में शामिल होना अनिवार्य है। इसके लिए दोनों राज्यों के बीच परमिट की संख्या पर सहमति होना ही पर्याप्त है। यह आदेश न्यायमूर्ति अरिंदम सिन्हा और न्यायमूर्ति सत्यवीर सिंह की खंडपीठ ने झांसी के मनीष अग्रवाल समेत पांच याचियों की याचिका पर दिया। याचिका में छह जुलाई 2026 को जारी बस परमिट को चुनौती दी गई थी। याचियों का तर्क था कि उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के बीच नया परिवहन समझौता लंबित है। ऐसे में समझौते में शामिल नहीं किए गए मार्ग पर परमिट जारी करना उचित नहीं है। कोर्ट ने मोटर वाहन अधिनियम की धारा 88 का हवाला दिया। कहा कि बस का प्रारंभिक और अंतिम स्थान एक ही राज्य में होने तथा दूसरे राज्य में मार्ग की दूरी 16 किलोमीटर से अधिक नहीं होने पर वहां के परिवहन विभाग की मंजूरी आवश्यक नहीं है। हालांकि, दोनों राज्यों के बीच परमिट की संख्या पर सहमति होनी चाहिए। कोर्ट ने पाया कि याची यह साबित नहीं कर सके कि जारी परमिट निर्धारित संख्या से अधिक हैं। ऐसे में परमिट निरस्त करने का कोई आधार नहीं है। इसी के साथ याचिका खारिज कर दी गई।

पूर्व आईएएस के खिलाफ अभियोजन मंजूरी और 2019 की रिपोर्ट रद्द, सक्षम प्राधिकारी नए सिरे से करें विचार

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यीडा) के पूर्व सीईओ और सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी प्रमोद चंद्र गुप्ता को बड़ी राहत दी है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यीडा) के पूर्व सीईओ और सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी प्रमोद चंद्र गुप्ता को बड़ी राहत दी है। कोर्ट ने उनके खिलाफ अभियोजन की मंजूरी देने के 21 अगस्त 2025 के आदेश और 15 मार्च 2019 की जांच रिपोर्ट को रद्द कर दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति चंद्र धारी सिंह और न्यायमूर्ति तरुण सक्सेना की खंडपीठ ने दिया है।

मामला हाथरस के मिधावली गांव में सात प्रतिशत आवासीय भूखंड योजना के लिए खरीदी गई 14.4896 हेक्टेयर जमीन से जुड़ा है। आरोप था कि किसानों से सस्ती दर पर जमीन खरीदकर यीडा को महंगे दाम पर बेची गई जिससे प्राधिकरण को करीब 23.92 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। इस मामले में गौतमबुद्ध नगर के कासना थाने में एफआईआर दर्ज की गई थी। याची आईएएस ने इसे हाईकोर्ट मं चुनौती दी। कोर्ट ने पक्षों को सुनने के बाद पाया कि अभियोजन की मंजूरी देते समय सक्षम प्राधिकारी ने संबंधित दस्तावेजों और बोर्ड के फैसलों पर स्वतंत्र रूप से विचार नहीं किया। वहीं, 2019 की रिपोर्ट में निष्कर्षों का ठोस आधार स्पष्ट नहीं था और याची को अपना पक्ष रखने का उचित अवसर भी नहीं दिया गया। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि इस फैसले से आरोपों की सत्यता पर कोई राय नहीं दी गई है और न ही याची दोषमुक्त हुए हैं। सक्षम प्राधिकारी नए सिरे से विचार कर सकता है। मुकदमे की आगे की कार्यवाही 12 सप्ताह के लिए स्थगित रहेगी।

मायके में महिला की मौत, शव देखकर पति ने करवाया पोस्टमार्टम

प्रयागराज। वाराणसी में तैनात पुलिस निरीक्षक गोपाल कन्हैया की पत्नी सुषमा (50) की सिविल लाइंस स्थित मायके में मौत हो गई। इसकी सूचना उन्हें बृहस्पतिवार सुबह करीब सात बजे दी गई। वह दोपहर करीब 1.30 मौके पर पहुंचे। वाराणसी में तैनात पुलिस निरीक्षक गोपाल कन्हैया की पत्नी सुषमा (50) की सिविल लाइंस स्थित मायके में मौत हो गई। इसकी सूचना उन्हें बृहस्पतिवार सुबह करीब सात बजे दी गई। वह दोपहर करीब 1रू30 मौके पर पहुंचे। वहां अंतिम संस्कार की तैयारी हो चुकी थी लेकिन शव की हालत देखकर गोपाल और उनकी बहन सावित्री पोस्टमार्टम के लिए अड़ गए। गोपाल के मुताबिक, सुषमा के मायके वाले पोस्टमार्टम के लिए तैयार नहीं थे। काफी देर चले विवाद के बीच शाम को शव रसूलाबाद घाट पर पहुंचा दिया गया। ऐसे में पुलिस को सूचना दी। शिवकुटी थाना पुलिस ने देर शाम शव को पोस्टमार्टम के लिए मोर्चरी में पहुंचाया।

पिकअप में प्लास्टिक कैरेट के नीचे छिपाकर ला रहे थे 342 किलो गांजा, एसटीएफ ने पकड़ा

प्रयागराज। रायपुर से प्रयागराज तक चल रहे गांजा तस्करी के नेटवर्क का एसटीएफ ने खुलासा किया है। प्लास्टिक के खाली कैरेट की आड़ में पिकअप से लाई जा रही 342 किलो गांजे की खेप पकड़ी गई है। इसकी कीमत 85.50 लाख रुपये बताई गई है।

उत्तर प्रदेश एसटीएफ ने अंतरराज्यीय गांजा तस्करी करने वाले गिरोह के एक सक्रिय सदस्य को गिरफ्तार किया है। उसके कब्जे से 342 किलोग्राम गांजा बरामद किया गया है। इसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में अनुमानित कीमत करीब 85.50 लाख रुपये बताई जा रही है। आरोपी छत्तीसगढ़ के रायपुर से पिकअप में गांजे की खेप लेकर प्रयागराज आ रहा था। तस्करों ने पुलिस से बचने के लिए गांजे को प्लास्टिक के खाली कैरेट के नीचे छिपा रखा था।

गिरफ्तार आरोपी की पहचान रमेश कुमार यादव पुत्र विजय शंकर यादव, निवासी ग्राम पूरे कान्ता, थाना हंडिया, प्रयागराज के रूप में हुई है। उसके पास से 342 किलोग्राम गांजे के अलावा महिंद्रा पिकअप बोलेरो और एक मोबाइल फोन बरामद किया गया है। एसटीएफ ने 20 नवंबर 2026 की रात 9रू45 बजे चित्रकूट जाने वाली सड़क



पर शंकरगढ़ थाना क्षेत्र में कार्रवाई की।

पुलिस के अनुसार तस्करी करने वाले गिरोह के सदस्य रायपुर (छत्तीसगढ़) से पिकअप में गांजा लादकर प्रयागराज आ रहे थे। उप निरीक्षक विनय तिवारी, मुख्य आरक्षी अश्वनी कुमार सिंह, संतोष कुमार, किशन चंद्र और आरक्षी चालक अखंड प्रताप पांडेय की टीम ने एसीपी बारा वेद व्यास मिश्रा के साथ शंकरगढ़ क्षेत्र में वाहन की तलाशी ली। पिकअप में रखे खाली प्लास्टिक कैरेट के नीचे बड़ी मात्रा में गांजा छिपाकर रखा गया था। इसके बाद चालक रमेश कुमार यादव को मौके पर गिरफ्तार कर लिया गया।

कई वर्षों से तस्करी में शामिल होने की बात कबूली

एसटीएफ के अनुसार, पूछताछ में आरोपी ने बताया कि गिरोह रायपुर से गांजा लाकर प्रयागराज और आसपास के जिलों में ऊंचे दामों पर बेचता है। पिकअप का मालिक श्याम बहादुर पुत्र शीतला प्रसाद, निवासी होलापुर, थाना हंडिया बताया गया है। आरोपी ने मुकेश यादव पुत्र मुनिराज यादव, निवासी धनतिया, थाना हंडिया का भी नाम लिया है।

आरोपी के मुताबिक, श्याम बहादुर के कहने पर वह पिकअप लेकर रायपुर गया था। वहां मुकेश यादव के संपर्क में रहकर उसने एक व्यक्ति को गाड़ी सौंपी थी। उस व्यक्ति ने प्लास्टिक के खाली कैरेट की आड़ में गांजा लादकर गाड़ी वापस कर दी थी। इसके बाद वह मुकेश यादव के बताए स्थान पर गांजे की खेप लेकर प्रयागराज आ रहा था।

पूछताछ में आरोपी ने यह भी बताया कि गिरोह के सदस्य कई वर्षों से गांजे की तस्करी कर रहे हैं। वह पहले भी कई बार गांजे की खेप पहुंचा चुका है। इस काम से होने वाला मुनाफा आपस में बांट लिया जाता है। खेप समय से पहुंचाने के लिए उसे 20 हजार रुपये अलग से मिलते थे। गिरफ्तार आरोपी के खिलाफ शंकरगढ़ थाने में एनडीपीएस एक्ट के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई है।

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन: एक्यूप्रेशर को आयुष में मिले मान्यता, सुरक्षित और सस्ता उपचार होने का दावा

प्रयागराज। आम लोगों को सस्ता और सुलभ उपचार उपलब्ध कराने के लिए एक्यूप्रेशर को आयुष में शामिल कर मान्यता देने की मांग उठी। झूंसी में आयोजित राष्ट्रीय एवं



अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में विशेषज्ञों ने शोध, प्रशिक्षण और सरकारी प्रोत्साहन पर जोर दिया।

एक्यूप्रेशर शोध प्रशिक्षण एवं उपचार संस्थान झूंसी में चल रहे 28वें राष्ट्रीय एवं चौथे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के तीसरे दिन शुक्रवार को सुपर एडवांस प्रशिक्षण का शुभारंभ हुआ। भारत विकास परिषद के संगठन मंत्री सुरेश जैन ने मुख्य अतिथि के रूप में प्रशिक्षण का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति को सुरक्षित, सस्ता और अत्यधिक प्रभावी है। इसे आयुष के अंतर्गत शामिल कर व्यापक मान्यता देने की जरूरत है। यह उपचार पद्धति आम लोगों के लिए किफायती विकल्प साबित हो सकती है। ऐसे में राज्य और केंद्र सरकार को इसकी मान्यता की दिशा में गंभीरता से प्रयास तेज करने चाहिए।

एक्यूप्रेशर विशेषज्ञों के अनुसार, इस चिकित्सा पद्धति को वैज्ञानिक शोध, प्रशिक्षण और व्यवस्थित संस्थागत ढांचे के माध्यम से और मजबूत बनाया जा सकता है। इसके लिए सरकार को इसके अध्ययन, शोध और प्रचार–प्रसार को प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि अधिक से अधिक लोगों तक इसका लाभ पहुंच सके। इस दौरान देशभर में एक्यूप्रेशर पद्धति के प्रचार–प्रसार, उपचार और प्रशिक्षण में उल्लेखनीय योगदान देने वाले विशेषज्ञों को सम्मानित किया गया। साथ ही, किडनी और मेरुदंड से जुड़ी जटिल बीमारियों के उपचार पर विशेषज्ञों ने शोध पत्रों और अपने अनुभवों के आधार पर चर्चा की।

कई विशेषज्ञ किए गए पुरस्कृत

सम्मेलन में इस वर्ष का माता प्रसाद खेमका सम्मान दिल्ली के अखिलेश सिंह, बीपी शुक्ला सम्मान अमित केसरवानी और केसी गोयल सम्मान एनके गुप्ता को दिया गया। प्रयागराज के चिकित्सक डॉ. अन्जेन्य शुक्ला को अति विशिष्ट सम्मान से सम्मानित किया गया। दिल्ली से पहुंचे राष्ट्रीय समन्वयक एसके गोयल को उपचार पद्धति के प्रचार–प्रसार तथा मनमोहन कूल को प्रवर समिति के सदस्य के रूप में विशिष्ट सम्मान दिया गया।

उपचार, प्रशिक्षण और एक्यूप्रेशर पद्धति के प्रचार–प्रसार में विशेष योगदान के लिए विशाल जायसवाल, सुनील मिश्रा, अभय त्रिपाठी, हनुमान मिश्रा, वीना मेहर और एमवी रविन्द्रा को सम्मानित किया गया। सम्मेलन में देश के विभिन्न हिस्सों से पहुंचे विशेषज्ञों को उनके विशिष्ट शोध पत्र प्रस्तुत करने के लिए भी सम्मानित किया गया। सुपर एडवांस प्रशिक्षण के पहले सत्र में प्रभात वर्मा ने किडनी से संबंधित जटिल बीमारियों का विश्लेषण करते हुए संस्थान में किए गए उपचार के प्रकरणों के आधार पर अपने अनुभव साझा किए। दूसरे सत्र में राम कुमार शर्मा और संस्थान के अध्यक्ष जेपी अग्रवाल ने मेरुदंड (स्पाइन) से संबंधित जटिल समस्याओं पर चर्चा की। कार्यशाला में एके द्विवेदी, रामकुमार शर्मा, प्रभात वर्मा, विशाल जायसवाल, राजेश वर्मा आदि मौजूद रहे।

लाखों का पैकेज छोड़ भारतीय चिकित्सा पद्धति से जुड़ीं अमेरिकी प्रीतम कनाडे

प्रयागराज। लाखों रुपये के पैकेज वाली नौकरी छोड़कर अमेरिका में रह रहीं भारतीय मूल की प्रीतम कनाडे अब एक्यूप्रेशर पद्धति के प्रचार–प्रसार में जुटी हैं। कोरोना काल में भाई को खोने के बाद उन्होंने योग और एक्यूप्रेशर की ओर रुख किया। प्रयागराज के जेपी अग्रवाल से प्रभावित होकर वर्ष 2023 में अमेरिका में इसका प्रचार शुरू किया और अब हजारों लोगों को ऑनलाइन प्रशिक्षण दे रही हैं। वह अमेरिका में एक्यूप्रेशर संस्थान खोलने के साथ ही भारत सरकार से इस पद्धति को मान्यता देने की मांग कर रही हैं।

मल्टीनेशनल कंपनी में लाखों रुपये के पैकेज वाली नौकरी छोड़कर भारतीय मूल की अमेरिकी नागरिक प्रीतम कनाडे अब एक्यूप्रेशर पद्धति के प्रचार–प्रसार में जुटी हैं। कोरोना काल में भाई को बचाने के लिए बड़े अस्पतालों में उपचार कराने के बावजूद उन्हें खोने के बाद उनके जीवन की दिशा बदल गई। इसके बाद उन्होंने योग, प्राणायाम और एक्यूप्रेशर पद्धति को समझना शुरू किया। अब वह अमेरिका में हजारों लोगों को इस भारतीय पद्धति से जोड़ रही हैं।

प्रीतम कनाडे प्रयागराज के



झूंसी स्थित एक्यूप्रेशर संस्थान के संस्थापक जेपी अग्रवाल से प्रभावित होकर अमेरिका से 28वें राष्ट्रीय एक्यूप्रेशर सम्मेलन में शामिल होने पहुंचीं। मूल रूप से महाराष्ट्र के पुणे की रहने वाली प्रीतम ने एमएनआईटी पुणे से बीटेक की पढ़ाई की है। उन्होंने कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों में ऊंचे पदों पर काम किया। बाद में वह अमेरिका के नॉर्थ कैरोलिना में रहने लगीं और वहां भी एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में कार्यरत थीं।

इसी दौरान कोरोना काल में भैया दूज के दिन उनके भाई संजय का निधन हो गया। प्रीतम ने बताया कि भाई को बचाने के लिए देश के बड़े अस्पतालों में उपचार कराया, लेकिन उन्हें बचाया नहीं जा सका। इस घटना ने उन्हें भीतर तक झकझोर दिया। वह खुद भी अनिद्रा की समस्या से जूझने लगीं। इसके बाद उन्होंने योग और प्राणायाम का अभ्यास शुरू किया। इसी दौरान इंटरनेट पर एक्यूप्रेशर संस्थान प्रयागराज के संस्थापक जेपी अग्रवाल के वीडियो देखने लगीं। उनकी उपचार पद्धति को समझने के साथ ही प्रीतम की इस विधा में रुचि बढ़ती गई। वर्ष 2023 से उन्होंने अमेरिका में एक्यूप्रेशर का प्रचार–प्रसार शुरू कर दिया। धीरे–धीरे ऑनलाइन माध्यम से एक समूह तैयार किया, जिसमें हजारों लोग जुड़ चुके हैं। वह ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से लोगों को एक्यूप्रेशर के तरीके सिखाती हैं। प्रीतम का कहना है कि भारतीय परंपरा में मौजूद इस उपचार पद्धति को अपने ही देश में अपेक्षित महत्व नहीं मिल रहा है, जबकि अमेरिका में लोग इसे लेकर काफी उत्साहित हैं। भारतीय पद्धति के प्रति अमेरिकियों की बढ़ती रुचि ने उन्हें इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है।

अब वह अमेरिका में एक्यूप्रेशर संस्थान खोलने की तैयारी कर रही हैं, ताकि अधिक से अधिक लोगों को इस पद्धति से जोड़ सकें। उन्होंने भारत सरकार से भी एक्यूप्रेशर पद्धति को मान्यता देने की अपील की है।

नीलामी की पुष्टि के बाद बिक्री रद्द करने का आयुक्त को अधिकार नहीं, कानून में स्पष्ट अधिकार जरूरी

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा है कि एक बार नीलामी की बिक्री की पुष्टि हो जाने और खरीदार को संपत्ति का कब्जा सौंप दिए जाने के बाद अधिकारी अपनी मर्जी से उस बिक्री को रद्द नहीं कर सकते। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा है कि एक बार नीलामी की बिक्री की पुष्टि हो जाने और खरीदार को संपत्ति का कब्जा सौंप दिए जाने के बाद अधिकारी अपनी मर्जी से उस बिक्री को रद्द नहीं कर सकते। इसके लिए कानून में स्पष्ट अधिकार होना जरूरी है। केवल नीलामी में गड़बड़ी का आरोप लगाकर पहले से पूरी हो चुकी बिक्री को दोबारा नहीं खोला जा सकता। यह आदेश न्यायमूर्ति अरुण कुमार ने रविंद्र कुमार त्रिपाठी की याचिका को स्वीकार करते हुए दिया।

मामला कानपुर के अनवरगंज स्थित मकान नंबर 84/59 की नीलामी से जुड़ा है। जल संस्थान का करीब 17,635 रुपये बकाया होने पर मकान की नीलामी कराई गई थी। 18 दिसंबर 1989 को हुई नीलामी में रविंद्र कुमार त्रिपाठी ने 1.90 लाख रुपये की सबसे अधिक बोली लगाई थी। इसके बाद 31 जनवरी 1990 को आयुक्त ने नीलामी की पुष्टि कर दी। दो फरवरी को बिक्री प्रमाणपत्र जारी हुआ और 13 फरवरी को खरीदार को मकान का कब्जा भी दे दिया गया। इसके बाद मकान से जुड़े लोगों ने नीलामी को चुनौती दी। शिकायतों के आधार पर आयुक्त ने 29 मार्च 1990 को नीलामी रद्द कर दी थी। राजस्व परिषद ने भी इस फैसले को बरकरार रखा था। याची ने इन आदेशों को हाईकोर्ट में चुनौती दी। हाईकोर्ट ने पक्षों को सुनने के बाद कहा कि नीलामी में गड़बड़ी की शिकायत बिक्री की तारीख से 30 दिन के भीतर की जानी चाहिए थी। इस मामले में आपत्ति तब दाखिल की गई, जब बिक्री की पुष्टि हो चुकी थी और खरीदार को कब्जा भी मिल गया था। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि आयुक्त को पहले से पुष्ट बिक्री की समीक्षा करने का सामान्य अधिकार नहीं है। नीलामी में अनियमितता और धोखाधड़ी अलग–अलग बातें हैं। धोखाधड़ी के आधार पर बिक्री को चुनौती देने के लिए दीवानी अदालत में मुकदमा दाखिल किया जा सकता है। हाईकोर्ट ने आयुक्त और राजस्व परिषद के दोनों आदेशों को रद्द कर दिया। साथ ही स्पष्ट किया कि पक्षकार कानून के अनुसार धोखाधड़ी के आधार पर दीवानी मुकदमा दाखिल कर सकते हैं।

रेलवे: यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ के लिए कई विशेष ट्रेनों का संचालन, प्रयागराज छिवकी स्टेशन पर होगा ठहराव

प्रयागराज। रेल प्रशासन ने यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को देखते हुए कई विशेष ट्रेनों के संचालन की घोषणा की है। ये विशेष ट्रेनें 20 नवंबर 2026 से 13 दिसंबर 2026 के बीच विभिन्न महत्वपूर्ण मार्गों पर चलेंगी। इनका ट्रेनों का प्रयागराज छिवकी रेलवे स्टेशन पर ठहराव सुनिश्चित किया गया है। रेल प्रशासन ने यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को देखते हुए कई विशेष ट्रेनों के संचालन की घोषणा की है। ये विशेष ट्रेनें 20 नवंबर 2026 से 13 दिसंबर 2026 के बीच विभिन्न महत्वपूर्ण मार्गों पर चलेंगी। इनका ट्रेनों का प्रयागराज छिवकी रेलवे स्टेशन पर ठहराव सुनिश्चित किया गया है। दानापुर–बंगलूरू कैंट एकतरफा विशेष ट्रेन (03247) 21 नवंबर को चलेगी, जो 22 नवंबर को प्रयागराज छिवकी रात 12रू35 बजे आकर 12रू40 बजे प्रस्थान करेगी। सहरसा–लोकमान्य तिलक टर्मिनस विशेष ट्रेन (05525) 20 नवंबर को रवाना होकर 21 नवंबर को दोपहर 12रू50 बजे पहुंचकर 12रू55 बजे छिवकी से रवाना होगी, जबकि वापसी में लोकमान्य तिलक टर्मिनस–सहरसा विशेष ट्रेन (05526) 22 नवंबर को चलकर 23 नवंबर को दोपहर 02रू25–2रू30 बजे आएगी। दानापुर–लोकमान्य तिलक टर्मिनस एकतरफा विशेष ट्रेन (03259) 21 नवंबर को चलकर उसी दिन रात 08रू00 बजे पहुंचकर 08रू05 बजे छिवकी से छूटेगी। बरौनी जंक्शन–एर्नाकुलम जंक्शन एकतरफा विशेष ट्रेन (05223) 21 नवंबर को चलकर 22 नवंबर को सुबह 09रू45 बजे आएगी और 09रू50 बजे रवाना होगी, वहीं पटना जंक्शन–एर्नाकुलम जंक्शन एकतरफा विशेष ट्रेन (03249) 22 नवंबर को चलकर 23 नवंबर को सुबह 05रू40 बजे पहुंचकर 05रू45 बजे प्रयागराज छिवकी से आगे बढ़ेगी।

इसके अलावा कन्याकुमारी–बनारस विशेष ट्रेन (06041/06042, 06051/06052), चेन्नई–बनारस–चेन्नई विशेष ट्रेन (06043/06044, 06049/06050, 06055/06056) और कोयंबटूर–बनारस–कोयंबटूर विशेष ट्रेन (06047/06048, 06053/06054) 25 नवंबर से 13 दिसंबर के बीच अलग–अलग तिथियों में संचालित होंगी। इसमें बनारस जाने वाली ट्रेनें दोपहर 03.00 बजे आकर 03.05 बजे और दक्षिण भारत लौटने वाली रात 02.45 बजे पहुंचकर 02.50 बजे प्रयागराज छिवकी से प्रस्थान करेंगी।

दोबारा शारीरिक माप कराने की मांग पर निर्णय ले बोर्ड, होमगार्ड भर्ती से जुड़े 23 अभ्यर्थियों को राहत

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने होमगार्ड भर्ती से जुड़े 23 अभ्यर्थियों को राहत दी है। कोर्ट ने दोबारा शारीरिक माप कराने की मांग पर पुलिस भर्ती बोर्ड को उनके प्रत्यावेदन पर 12 सप्ताह में कानून के अनुसार निर्णय लेने का निर्देश दिया है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने होमगार्ड भर्ती से जुड़े 23 अभ्यर्थियों को राहत दी है। कोर्ट ने दोबारा शारीरिक माप कराने की मांग पर पुलिस भर्ती बोर्ड को उनके प्रत्यावेदन पर 12 सप्ताह में कानून के अनुसार निर्णय लेने का निर्देश



दिया है। न्यायमूर्ति मनीष कुमार निगम की एकल पीठ ने यह आदेश देते हुए याचिका निस्तारित कर दी।

औरैया के सचिन यादव और 22 अन्य अभ्यर्थियों ने याचिका दाखिल कर होमगार्ड पद पर चयन के लिए अपनी अभ्यर्थिता पर विचार करने की मांग की थी। याचियों का कहना था कि उनकी शारीरिक मानक परीक्षा दोबारा कराई जाए। यदि वे निर्धारित मानकों के अनुसार पात्र पाए जाते हैं तो उन्हें नियुक्ति के लिए विचार में लिया जाए।

याचियों की ओर से अधिवक्ता ने कोर्ट को बताया कि अभ्यर्थियों ने अपनी शिकायतों के निस्तारण के लिए पुलिस भर्ती बोर्ड के संबंधित अधिकारी के समक्ष कई प्रत्यावेदन दिए हैं। इनमें तीन और चार अगस्त 2026 को दिए गए प्रत्यावेदन भी शामिल हैं लेकिन अब तक उन पर कोई निर्णय नहीं लिया गया है। इस पर कोर्ट ने भर्ती बोर्ड को निर्देश दिया कि वह सभी अभ्यर्थियों के प्रत्यावेदनों पर 12 सप्ताह के भीतर कानून के अनुसार निर्णय ले।

मुंबई–अहमदाबाद बुलेट ट्रेन कॉरिडोर के सूरत–बिलीमोरा खंड में ओवरहेड विद्युत प्रणाली को किया गया ऊर्जीकृत

देश की पहली बुलेट ट्रेन परियोजना की दिशा में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि

मुंबई। भारत की पहली बुलेट ट्रेन परियोजना के अंतर्गत मुंबई–अहमदाबाद हाई स्पीड रेल कॉरिडोर के सूरत–बिलीमोरा खंड में ओवरहेड उपकरण (ओएचई) प्रणाली को दिनांक 20 नवंबर 2026 को सफलतापूर्वक ऊर्जीकृत (म्दमतहपेमक) किया गया।

सुरक्षा एवं निर्धारित प्रक्रियाओं के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए तकनीकी टीमों की कड़ी निगरानी में ओएचई प्रणाली का ऊर्जीकरण छोटे–छोटे खंडों में चरणबद्ध तरीके से किया जाएगा।

इस खंड में एलिवेटेड रेल मार्ग पर अप एवं डाउन दोनों लाइनें शामिल हैं। ओएचई प्रणाली का ऊर्जीकरण परियोजना के अंतर्गत आगामी परीक्षण गतिविधियों की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

मुंबई–अहमदाबाद हाई स्पीड रेल कॉरिडोर में आधुनिक 2.25 केवी ओवरहेड ट्रैक्शन प्रणाली स्थापित की गई है। यह विश्वभर में हाई स्पीड रेल प्रणालियों में उपयोग की जाने वाली अत्याधुनिक विद्युतीकरण तकनीकों में से एक है।

508 किलोमीटर लंबे इस कॉरिडोर में कुल 14 रणनीतिक स्थानों पर ट्रैक्शन सब–स्टेशन (टीएसएस) स्थापित किए गए हैं। ये सब–स्टेशन राष्ट्रीय विद्युत ग्रिड से बिजली प्राप्त कर हाई स्पीड ट्रेनों की ओवरहेड ट्रैक्शन प्रणाली को विद्युत आपूर्ति करेंगे।

गुजरात के नवसारी जिले में स्थित बिलीमोरा के प्रथम ट्रैक्शन सब–स्टेशन में कंट्रोल पैनल, चेंजओवर स्विच, ट्रांसफॉर्मर एवं सर्किट ब्रेकर भवनों में स्थापना संबंधी कार्य पूरे कर लिए गए हैं।



गुजरात एनर्जी ट्रांसमिशन कॉरपोरेशन लिमिटेड के 220 केवी अंबेठा ग्रिड सब–स्टेशन से विद्युत आपूर्ति प्राप्त होगी।

पूरे विद्युत नेटवर्क की निगरानी एक केंद्रीकृत नियंत्रण केंद्र के माध्यम से की जाएगी, जिससे सुरक्षित एवं विश्वसनीय रेल परिचालन सुनिश्चित किया जा सकेगा। सूरत–बिलीमोरा खंड में दोनों स्टेशनों के बीच लगभग 50 किलोमीटर लंबा एलिवेटेड रेल मार्ग शामिल है।

इस रेल मार्ग में चार नदियों पर निर्मित पुल तथा राष्ट्रीय राजमार्ग–53 के ऊपर एक स्टील पुल भी शामिल है। इसके अतिरिक्त, आसपास के क्षेत्रों में ध्वनि के प्रभाव को कम करने के लिए वायडक्ट पर लगभग 94,000 नॉइज बैरियर लगाए गए हैं।

ओवरहेड विद्युत प्रणाली के ऊर्जीकृत होने के उपरांत रेल मार्ग के आसपास रहने वाले नागरिकों, यात्रियों, निर्माण कार्य में लगे श्रमिकों एवं आमजन से सख्त अपील की जाती है कि वे ओवरहेड विद्युत उपकरणों के पास न जाएं और न ही उन्हें छूने का प्रयास करें। साथ ही, इन विद्युत प्रतिष्ठानों के आसपास किसी भी प्रकार का अनधिकृत कार्य न करें। यह सावधानी जनसुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है।

उत्तर गगन से धूप

(छप्पय)

आकर कोमल धूप ओस को गले लगाए।
मधुर रश्मि के संग गगन में उसे उड़ाए।
मधुप करें गुंजार तितलियाँ पंख पसारे।
सजी धजी यह धरा निज छवि आप पधारे।
मिटाअँधेरा रात का फैला दिव्य प्रकाश है।
हर प्राणी के ह्रदय में जगी नवल नव आस है।।

मोती का धर रूप ओस जब चम चम चमके।
उतर गगन से धूप चुन रही उसको झुक के।
शीतल पवन बयार सुहावन मन को भाए।
खिले सुमन चहुँ ओर भँवरे मधुरस पाए।
महक उठे उपवन सभी कलियाँ भी मुस्कुरा रहीं।
नव प्रभात की लालिमा मन में प्रीति जगा रही।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

वैन की कार से टक्कर में ड्राइवर और 8 साल की बच्ची की मौत, 5 घायल

लखनऊ (संवाददाता)। राजधानी में शनिवार रात करीब 1 बजे भीषण सड़क हादसा हो गया। मलिहाबाद के पुरवा गांव के पास वैन और होंडा सिटी की आमने–सामने टक्कर हो गई। हादसे में वैन चालक और 8 साल की बच्ची की मौत हो गई। पांच लोग घायल हो गए। टक्कर इतनी तेज थी कि दोनों गाड़ियां क्षतिग्रस्त हो गईं। हादसे के बाद होंडा सिटी का चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस के मुताबिक, मारुति ओमिनी वैन में सवार लोग रहीमाबाद के दौलतपुर गांव से शादी समारोह में शामिल होकर लौट रहे थे। वहां खंजन लाल की बेटी शैलेंद्री की शादी थी। वैन सवार उन्नाव के हसनगंज क्षेत्र स्थित कुईयां मदारपुर गांव जा रहे थे। इसी दौरान पुरवा गांव के पास सामने से आ रही होंडा सिटी से उनकी वैन की टक्कर हो गई। हादसे में वैन चालक रामजी उर्फ अमित कुमार (20) पुत्र देशराज निवासी ऊंचा द्वार, हसनगंज, उन्नाव और प्रिया (8) पुत्री सर्वेश निवासी लुधई, रहीमाबाद की मौत हो गई। प्रिया कक्षा पांच की छात्रा थी। वह बीते तीन दिनों से अपने ननिहाल कुईयां मदारपुर, हसनगंज में मां के साथ रह रही थी। वहीं से शादी समारोह में शामिल होने आई थी। हादसे में प्रिया की मां दयावती (30), आशिक (16), सरोज कुमारी (30), आनंद और दीपांशी (17) घायल हो गए। दयावती की हालत गंभीर बताई जा रही है। सूचना पर मलिहाबाद पुलिस मौके पर पहुंची। स्थानीय लोगों की मदद से सभी घायलों को सीएचसी मलिहाबाद पहुंचाया गया। दोनों शव पोस्टमार्टम के लिए लखनऊ भेजे गए हैं। हादसे के बाद होंडा सिटी का चालक कार छोड़कर भाग निकला। पुलिस उसकी तलाश कर रही है। दोनों दुर्घटनाग्रस्त वाहनों के संबंध में कार्रवाई की जा रही है। पुलिस को तहरीर मिलने के बाद आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

स्वच्छता और सही दवा उपयोग से ही एएमआर पर रोक सम्भव

लखनऊ (संवाददाता)। एंटीबायोटिक का अनावश्यक एवं अनियमित उपयोग, संक्रमण की रोकथाम में लापरवाही और दवाओं के प्रति जागरूकता का अभाव आज वैश्विक स्वास्थ्य के सामने गंभीर चुनौती बनता जा रहा है। यदि अभी से सावधानी नहीं बरती गई तो भविष्य में सामान्य संक्रमण, छोटी सर्जरी, मामूली चोट और सामान्य बीमारियों का उपचार भी अत्यंत कठिन हो सकता है। एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस एएमआर केवल चिकित्सा जगत की समस्या नहीं, बल्कि पूरे समाज और आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य से जुड़ा विषय है। इसके नियंत्रण के लिए स्वच्छता, संक्रमण की रोकथाम, टीकाकरण तथा एंटीमाइक्रोबियल औषधियों के विवेकपूर्ण उपयोग को जन–आंदोलन बनाना आवश्यक है।यह विचार स्टेट फार्मेसी काउंसिल उत्तर प्रदेश के पूर्व चेयरमैन एवं फार्मासिस्ट फेडरेशन के अध्यक्ष सुनील यादव ने नेशनल फार्मेसी वीक 2026 के अवसर पर टीआरसी महाविद्यालय में आयोजित उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।उन्होंने बताया कि 15 से 21 नवंबर तक मनाए जा रहे 65वें नेशनल फार्मेसी वीक का आयोजन फार्मेसी क्षेत्र की भूमिका को जनस्वास्थ्य से जोड़ने का महत्वपूर्ण अवसर है। इस वर्ष भारतीय फार्मास्युटिकल एसोसिएशन की थीम " इम्पावरिंग फार्मासिस्ट्स फॉर हेल्दीयर फ्यूचर" है, जबकि फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया ने इसके व्यापक अभियान को "स्वस्थ भारतरूकमबेटिंग एंटी माइक्रो बाइल रेजिस्टेंस एएमआर" से जोड़ा है।सुनील यादव ने कहा कि एएमआर वह स्थिति है जब बैक्टीरिया, वायरस, फंगस और परजीवी जैसे सूक्ष्मजीवों में बदलाव होने के कारण उन पर प्रभावी रहने वाली दवाएं अपना असर खोने लगती हैं। इसके परिणामस्वरूप संक्रमण का उपचार कठिन, लंबा और महंगा हो सकता है तथा गंभीर मामलों में मृत्यु का खतरा भी बढ़ जाता है।

वायु गुणवत्ता में सुधार हेतु नगर निगम प्रयागराज द्वारा नियमित धुलाई एवं धूल नियंत्रण अभियान

प्रयागराज। शहर की वायु गुणवत्ता में सुधार एवं धूल प्रदूषण को नियंत्रित करने के उद्देश्य से नगर निगम प्रयागराज द्वारा निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इसी क्रम में नगर आयुक्त श्री सीलम साईं तेजा, ी के निर्देशन में शहर के विभिन्न मार्गों, चौराहों, रोड साइड पटरियों, डिवाइडरों, मूर्तियों एवं पेड़–पौधों की धुलाई और जल छिड़काव का कार्य प्रतिदिन निर्धारित रोस्टर के अनुसार कराया जा रहा है।



इस अभियान के तहत नगर निगम द्वारा कुल 33 मशीनों को लगाया गया है, जिसमें 19 मिनी स्प्रिंकलर, 7 बड़ी स्प्रिंकलर मशीनें एवं 7 मैकेनाइज्ड रोड स्वीपिंग मशीनें शामिल हैं। इन मशीनों के माध्यम से प्रमुख मार्गों, चौराहों, फुटपाथों एवं सार्वजनिक स्थलों पर नियमित जल छिड़काव और धुलाई कर धूल के जमाव को कम करने तथा साफ–सफाई सुनिश्चित की जा रही है।

नगर निगम द्वारा शहर में धूल नियंत्रण एवं वायु गुणवत्ता में सुधार के लिए नियमित रूप से मशीनों का संचालन रोस्टर के अनुसार कराया जा रहा है।

सड़कों के साथ–साथ रोड साइड पटरियों, डिवाइडरों एवं अन्य सार्वजनिक स्थलों की सफाई पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। नगर निगम का प्रयास है कि शहरवासियों को स्वच्छ, सुंदर एवं स्वस्थ वातावरण उपलब्ध कराया जा सके।

नगर निगम प्रयागराज द्वारा शहर को स्वच्छ एवं बेहतर बनाने के लिए लगातार अभियान चलाए जा रहे हैं। नागरिकों से भी अपील है कि वे सार्वजनिक स्थलों पर कूड़ा न फैलाएं तथा शहर की स्वच्छता बनाए रखने में सहयोग करें।

बीमारी से परेशान एक बुजुर्ग ने छत से कूदकर की आत्महत्या

लखनऊ (संवाददाता)। राजधानी में शनिवार दोपहर दमा की बीमारी से परेशान एक बुजुर्ग ने छत से कूदकर आत्महत्या कर ली। वह लंबे समय से बीमारी के चलते परेशान रहते थे। प्रदीप ने शादी नहीं की थी। घटना के समय परिवार के अन्य सदस्य घर में ही मौजूद थे। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। घटना पारा इलाके की है। मुरादाबाद निवासी प्रदीप भटनागर (अविवाहित) अपने भांजे कृष्ण मोहन श्रीवास्तव के साथ रहते थे। दोनों बाबू बलखंडी प्रधान मार्ग स्थित नव मानक नगर कॉलोनी में रहते थे। कृष्ण मोहन पेशे से वकील हैं। प्रदीप को लंबे समय से दमा की बीमारी थी। इसके चलते वह काफी परेशान रहते थे। शनिवार दोपहर प्रदीप मकान की छत पर जाकर नीचे छलांग लगा दी। मौके पर ही उनकी मौत हो गई।गिरने की आवाज सुनकर परिवार के लोग घर के बाहर निकले। शव देखते ही चीख–पुकार मच गई। घटना की सूचना पुलिस को दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को मॉर्चरी हाउस भेज दिया।

यूपी स्पेशल टीईटी 2026: रिजल्ट 17 दिन में जारी, 59 फीसदी अभ्यर्थी फेल

लखनऊ (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश के परिषदीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों और स्पेशल एजुकेटर के लिए हुई स्पेशल टीईटी 2026 का परिणाम उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग ने 20 नवंबर की देर रात परीक्षा का रिजल्ट जारी किया। परीक्षा में 93,681 अभ्यर्थी शामिल हुए थे, जिनमें 38,902 उम्मीदवार सफल हुए और 54,779 अभ्यर्थी असफल रहे हैं। करीब 59 फीसदी अभ्यर्थी फेल हुए हैं।आयोग ने परीक्षा परिणाम के साथ सफल अभ्यर्थियों के प्रमाण पत्र भी जारी कर दिए हैं, जिन्हें ऑनलाइन डाउनलोड किया जा सकता है।उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग के अध्यक्ष डॉ. प्रशांत कुमार और उपसचिव डॉ. संजय कुमार सिंह की ओर से परीक्षा परिणाम रिकॉर्ड समय में जारी किया गया है। स्पेशल टीईटी 2026 की परीक्षा 3 नवंबर को प्रदेश के छह मंडल मुख्यालयों प्रयागराज, लखनऊ, वाराणसी, गोरखपुर, मेरठ और आगरा में दो पालियों में हुई थी। 5 नवंबर को प्रोविजनल आंसर–की जारी की गई और 12 नवंबर तक अभ्यर्थियों से आपत्तियां मांगी गई थीं।कक्षा 1 से 5 तक के शिक्षकों के लिए प्राथमिक स्तर की परीक्षा में कुल 50,666 अभ्यर्थी शामिल हुए। इनमें 15,159 उम्मीदवार सफल घोषित किए गए, जबकि 35,507 अभ्यर्थी परीक्षा में असफल रहे। कक्षा 6 से 8 तक के लिए उच्च प्राथमिक स्तर की परीक्षा में कुल 43,015 अभ्यर्थियों ने भाग लिया। इसमें 23,743 अभ्यर्थी सफल हुए जबकि 19,272 उम्मीदवारों को असफल घोषित किया गया है।स्पेशल टीईटी के साथ आयोग ने अशासकीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों और महिला महाविद्यालयों में प्राचार्य भर्ती का अंतिम परिणाम भी घोषित कर दिया है।अध्यक्ष डॉ. प्रशांत कुमार के अनुसार इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ पीठ में लंबित विशेष अपील पर 20 नवंबर को पारित आदेश के अनुपालन में एक पद को रोकते हुए 110 चयनित अभ्यर्थियों का अंतिम परिणाम जारी किया गया है।

पांचों विधानसभा के विद्यार्थियों ने निबंध और क्विज प्रतियोगिता में दिखाई प्रतिभा

सीडीओ और ज्वाइंट मजिस्ट्रेट ने किया उत्साहवर्धन, रंगोली और पोस्टर के जरिए दिया मतदान का संदेश

मथुरा। स्वीप कार्यक्रम के तहत शनिवार को ब्लैकस्टोन कॉलेज में जनपद स्तरीय निबंध एवं क्विज प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें बलदेव, छाता, गोवर्धन, मथुरा और मांट विधानसभा क्षेत्रों के चयनित छात्र–छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सीडीओ पूजा गुप्ता और ज्वाइंट मजिस्ट्रेट सलोनी गौतम ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि जागरूक मतदाता ही मजबूत लोकतंत्र की आधारशिला है। युवाओं को स्वयं मतदान के प्रति जागरूक रहने के साथ परिवार और समाज के लोगों को भी मतदान के लिए प्रेरित करना चाहिए।

जनपद स्वीप कोऑर्डिनेटर डॉ. अखिलेश यादव के मार्गदर्शन में आयोजित प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने निबंध और प्रश्नोत्तरी के माध्यम से अपनी प्रतिभा दिखाई। इस दौरान छात्र–छात्राओं की ओर से बनाई गई रंगोली और लोकतंत्र की दीवार पर प्रदर्शित पोस्टर एवं पेंटिंग आकर्षण का केंद्र रहे। इनके माध्यम से मतदान के महत्व और मतदाता अधिकारों का संदेश दिया गया।

डॉ. अखिलेश यादव ने कहा कि लोकतंत्र की मजबूती के लिए प्रत्येक मतदाता की सहभागिता जरूरी है। ऐसे आयोजन युवाओं में लोकतांत्रिक चेतना विकसित



करते हैं। कार्यक्रम में श्री दीनदयाल, पल्लवी, निखिल अग्रवाल, विनोद कुमार शुक्ला, डॉ. रोली तिवारी, डॉ. गुरुप्यारी सत्संगी, मीनाक्षी चौधरी, अंकित अग्रवाल, सूची खंडेलवाल, राजेश झा, सारिका भाटिया सहित विभिन्न विद्यालयों के शिक्षक, स्वीप कोऑर्डिनेटर और छात्र–छात्राएं मौजूद रहे।

लखनऊ के अटारी में बनेगा चौधरी चरण सिंह सीड पार्क

लखनऊ (संवाददाता)। लखनऊ के मलिहाबाद तहसील स्थित राजकीय कृषि प्रक्षेत्र अटारी में श्भारत रत्न चौधरी चरण सिंह सीड पार्कश बनाने का काम आगे बढ़ गया है। इसके लिए कृषि विभाग ने जरूरी जमीन जुटाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। विभाग की ओर से आम लोगों और किसानों की जानकारी के लिए एक सार्वजनिक सूचना जारी की गई है, जिसके तहत आपसी सहमति से कुल 3.6344 हेक्टेयर जमीन खरीदी या अधिग्रहित की जाएगी।अपर कृषि निदेशक बीज एवं प्रक्षेत्र डॉ. योगेश प्रताप सिंह ने बताया कि इस परियोजना के लिए मलीहाबाद तहसील के शाहमऊ, रुदानखेड़ा, अटारी और पाराभदराही सूची में शामिल नौबस्ता गांव सहित की जमीन ली जानी है। इन गांवों के कुल 46 गाटा नंबरों कुल रकबा 16.0700 हेक्टेयर में से 3.6344 हेक्टेयर जमीन सीड पार्क के लिए तय की गई है। जमीन के नंबर, क्षेत्रफल और खातेदारों के नाम की पूरी सूची स्थानीय अखबारों में छपवाई जा रही है, ताकि सभी को इसकी स्पष्ट जानकारी मिल सके।

कांग्रेस सहारनपुर से करेगी चुनावी शंखनाद!

राहुल गांधी के सामने पुराना वोट बैंक जोड़ना चुनौती

लखनऊ (संवाददाता)। यूपी में होने वाले असेम्बली इलेक्शन की तैयारियों को गति देने के लिए कांग्रेस की शीर्ष नेतृत्व राहुल गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को मैदान में उतारने की रणनीति है। कांग्रेस नेताओं के साथ हुई बैठक में राहुल गांधी के इस पर चिंता जताए जाने के बाद कि भाजपा औरसमाजवादी पार्टी ने प्रचार अभियान शुरू कर दिया है, कांग्रेस अभी पीछे है, पार्टी ने दिसंबर से राज्यव्यापी रैलियों का कार्यक्रम तय किया है। राहुल गांधी 10 दिसंबर के आसपास सहारनपुर से जनसभा को संबोधित कर चुनावी अभियान का आगाज कर सकते हैं, जिसमें मल्लिकार्जुन खरगे के भी शामिल होने की संभावना है। रैली की मुख्य थीम श्संविधान बचाओश होगी। 26 नवंबर को संविधान दिवस के अवसर पर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे लखनऊ में श्संविधान रक्षा मार्चश में हिस्सा लेंगे। इस दिन पार्टी की मतदाता सूची अनियमितताओं या श्वोट चोरीश के विरोध में और मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार को पद से हटाने की मांग को लेकर देशव्यापी प्रदर्शन की योजना है। सहारनपुर से शुरुआत कर राहुल गांधी पूरे उत्तर प्रदेश में आधा दर्जन रैलियों को संबोधित करेंगे, जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संसदीय क्षेत्र वाराणसी भी शामिल है। वाराणसी दौरे के दौरान राहुल गांधी बाबा विश्वनाथ के दर्शन करेंगे और सहारनपुर में मां शाकंभरी देवी मंदिर जा सकते हैं। अयोध्या में राम मंदिर दर्शन को लेकर अभी कोई निर्णय नहीं लिया गया है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सहारनपुर को चुनने के पीछे पार्टी का स्पष्ट सामाजिक और राजनीतिक गणित मानी जा रही है। सहारनपुर मुस्लिम बहुल क्षेत्र है और यहां के सांसद इमरान मसूद को यूपी कांग्रेस का कार्यकारी अध्यक्ष बनाये गये है। एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी यहां जनसभा कर चुके है। उनके सहयोगी चंद्रशेखर आजाद सहारनपुर से ही आते हैं, इसलिए कांग्रेस मुस्लिम, दलित मतदाताओं को आजाद–ओवैसी गठबंधन की ओर जाने से रोकने का प्रयास कर रही है।

इंटीग्रल यूनिवर्सिटी में 18वां दीक्षांत समारोह,6,300 स्टूडेंट्स को मिली डिग्री,295 को मेडल

लखनऊ (संवाददाता)। राजधानी के इंटीग्रल यूनिवर्सिटी में शनिवार को 18वां दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया। इसमें अलग–अलग कोर्स के 6,300 स्टूडेंट्स को डिग्री और डिप्लोमा दिए गए। वहीं, बेहतर प्रदर्शन करने वाले 295 मेध ाावियों को मेडल देकर सम्मानित किया गया। आयशा कुद्दुस को यूनिवर्सिटी गोल्ड मेडल मिला। एग्रीकल्चर की प्रज्ञा को पहला फैकल्टी गोल्ड मेडल दिया गया। आर्किटेक्चर की काजल तिवारी को भी गोल्ड मेडल मिला। विदेशी स्टूडेंट्स ने भी गोल्ड मेडल हासिल किया। समारोह के मुख्य अतिथि पद्मश्री डॉ. दिनेश सिंह रहे। वह केआर मंगलम विश्वविद्यालय के चांसलर, जम्मू–कश्मीर राज्य उच्च शिक्षा परिषद के वाइस चेयरमैन और दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति हैं।

पूर्वोत्तर रेलवे — ई-नीलामी आमंत्रण सूचना

मण्डल रेल प्रबंधक (वाणिज्य), पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी द्वारा भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य के आवंटन हेतु ई-नीलामी (E-Auction) किया जाना है।

आवंटन कैटलाग नम्बर BSB26PARKING26

कार्य का विवरण	ई-नीलामी का समय
गाजीपुर स्टेशन स्थित (चार पहिया) स्टैण्ड का ठेका	10.00 बजे से 10.30 बजे तक
सलेमपुर स्टेशन स्थित (तीन/चार पहिया) स्टैण्ड का ठेका	10.00 बजे से 10.40 बजे तक
बक्सा स्टेशन स्थित (दो/तीन/चार पहिया) स्टैण्ड का ठेका	10.00 बजे से 10.50 बजे तक
चौरी-चौरा स्टेशन स्थित (दो/तीन/चार पहिया) स्टैण्ड का ठेका	10.00 बजे से 11.00 बजे तक
भिखड़ाराँव स्टेशन स्थित (दो/तीन/चार पहिया) स्टैण्ड का ठेका	10.00 बजे से 11.10 बजे तक

आवंटन कैटलाग नम्बर BSB21PAYNUSE26

भिखड़ाराँव स्टेशन स्थित (पे एण्ड यूज शौचालय) का ठेका	10.00 बजे से 10.30 बजे तक
बलिया पी.एफ-4 स्टेशन स्थित (पे एण्ड यूज शौचालय) का ठेका	10.00 बजे से 10.40 बजे तक
लमकुही रोड स्टेशन स्थित (पे एंड यूज शौचालय) का ठेका	10.00 बजे से 10.50 बजे तक

• उपरोक्त सभी कार्यों हेतु अवधि-03 वर्ष • उपरोक्त सभी कार्यों हेतु ई-नीलामी की तिथि-04.12.2026.

• ई-नीलामी (E-Auction) IREPS पोर्टल पर ऑनलाईन होगी। • ई-नीलामी (E-Auction) में भाग लेने के लिए इच्छुक व्यक्ति द्वारा IREPS पोर्टल पर ऑनलाईन रु. 10,000/- (Non Refundable) ऑनलाईन जमा कर एक बार (One Time Registration) करना आवश्यक है। साथ ही उसे SBI (स्टेट बैंक ऑफ इंडिया) में करेंट खाता हो जिसे IREPS पोर्टल से लिंक करना आवश्यक होगा। EMD लाट/पैकट की वार्षिक कीमत का 10% (अर्नेस्ट मनी दस प्रतिशत) होगी, जिसका भुगतान/वापसी उसी खाते से होगी। • ई-नीलामी (E-Auction) से संबंधित नियम एवं शर्तों की सम्पूर्ण जानकारी IREPS पोर्टल (www.ireps.gov.in) के E-Auction Leasing Section में उपलब्ध है।

सूचना/वाणिज्य 298 — सहायक वाणिज्य प्रबन्धक, वाराणसी

गाड़ियों की छतों व पायदान पर कदापि यात्रा न करें

सम्पादकीय.....

खतरा हैं हर पक्ष के अतिवादी

एक समय माओवादियों से त्रस्त रहे बस्तर में अर्धसैनिक बलों के साथ दीवाली मनाते समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने माओवाद से मुक्ति दिलाने में सुरक्षा बलों की सराहना करते हुए आगाह भी किया कि यह खतरा अभी पूरी तरह टला नहीं, क्योंकि दिमागी नक्सलियों ने अन्य अनेक क्षेत्रों में भी अपनी पैठ बनाई हुई है। उन्होंने कहा कि आज भी वे देश के संविधान और लोकतंत्र के खिलाफ लोगों को भड़का रहे हैं और हमें इनकी पहचान करनी होगी, इन्हें परास्त करना होगा और राष्ट्र को पूरी तरह सुरक्षित बनाना होगा। मोदी के इन शब्दों को गंभीरता से लिया जाना चाहिए। स्मरण रहे कि भारत का लोकतांत्रिक संविधान महात्मा गांधी के नेतृत्व में लड़े गए स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित देश की आकांक्षाओं का प्रतीक है और इन आकांक्षाओं में सर्वप्रमुख आकांक्षा यही थी कि सभी भारतीय विशेषकर गरीब, वंचित और हाशिए के लोग अपनी बुनियादी जरूरतों की पूर्ति के साथ सुरक्षित एवं गरिमापूर्ण जीवन जी सकें। भारतीय समाज पारंपरिक रूप में कुछ सामंती स्वरूप का रहा, पर संविधान ने उसके आधुनिकीकरण की राह तैयार की। संविधान में उसके दायरे के भीतर या बाहर देश में बदलाव लाने के लिए हिंसा का सहारा लेने वाले किसी भी समूह के लिए कोई स्थान नहीं था। इसलिए, जिन भी तत्वों ने अति–वामपंथी विचारधारा को बढ़ावा देने के लिए बंदूक उठाई, उन्हें कतई बर्दाश्त नहीं किया जा सकता था। उनका मुकाबला करना अनिवार्य था। यह संतोषजनक है कि मोदी सरकार में माओवादी हिंसा के विरुद्ध मुहिम को सफलता मिली। माओवादी हिंसा के उन्मूलन में सुरक्षा बलों के शौर्य और मोदी सरकार की दृढ़ता को स्वीकार कर उन्हें श्रेय दिया ही जाना चाहिए जिस तरह हिंसा का समर्थन करने वाले धुर वामपंथी संवैधानिक मूल्यों को दरकिनार करते हैं, ठीक उसी तरह समाज और राजनीति में अतिवादी विचार थोपने वाले धुर दक्षिणपंथी भी संविधान की भावना से विमुख होते हैं। हमारा संविधान एक भविष्योन्मुखी दस्तावेज है और यही सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम है। संविधान ने इस पहलू को स्वीकार किया कि भारतीय समाज के कुछ वर्गों ने ऐतिहासिक भेदभाव का सामना किया है। इसीलिए उनके सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के लिए इसने अफर्मेटिव एक्शन यानी आरक्षण जैसी व्यवस्था के सिद्धांत को अपनाया। ऐसे में जो धुर दक्षिणपंथी ऊंच–नीच पर आधारित पुराने समाज की ओर लौटने में यकीन रखते हैं, उनके लिए भी लोकतांत्रिक भारतीय गणराज्य में कोई स्थान नहीं। धुर वामपंथ और धुर दक्षिणपंथ दोनों के अतिवादी कृत्य संविधान के अनुरूप नहीं हैं। धुर वामपंथी जहां क्रांति लाने के लिए हिंसक बदलाव के पैरोकार हैं, वहीं धुर दक्षिणपंथी सामाजिक क्षेत्र सहित लगभग सभी क्षेत्रों में अतीत की ओर देखते हैं। हिंसा उन सभी आदर्शों के बिल्कुल विपरीत है, जिनका संविधान प्रतिनिधित्व करता है। आस्था, समुदाय और जाति के आधार पर भेदभाव करने वाले कृत्य भी सीधे तौर पर संविधान के विरुद्ध हैं। भारत के संवैधानिक मूल्य और व्यवस्थाएं इतनी व्यापक और गहरी हैं कि वे सभी शिकायतों और समस्याओं का विवेकपूर्ण समाधान कर सकती हैं। यह समाधान भले ही तात्कालिक न हो और इसमें आपसी तालमेल एवं परस्पर विनिमय की प्रक्रिया शामिल हो, लेकिन इसी व्यवस्था में ही व्यापक सद्भावना के साथ उन मुद्दों के भी हल निकाले गए हैं, जो कभी अनसुलझे प्रतीत होते थे। आज सार्वजनिक विमर्श में जिस प्रकार की तनातनी महसूस होती है, वह स्पष्ट रूप से राजनीतिक वर्ग के बीच सार्थक संवाद की महत्ता को नए सिरे से रेखांकित करती है। ऐसा लगता है कि मौजूदा दौर में राजनीतिक वर्ग के लोग आपस में पर्याप्त संवाद नहीं कर रहे हैं। इसकी झलक संसद और राज्य विधानमंडलों के भीतर और बाहर, दोनों जगह दिखाई दे रही है। राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि टीवी पर होने वाली जिन तल्ख बहसों में हिस्सा लेते हैं, उसे संवाद की संज्ञा तो नहीं दी जा सकती। इसी तरह डिजिटल माध्यमों पर एक–दूसरे के खिलाफ की जाने वाली छींटाकशी या ट्रोलिंग को भी संवाद नहीं कहा जा सकता। संवाद के लिए एक–दूसरे के दृष्टिकोण को समझने के साथ–साथ राष्ट्र की प्रगति के उद्देश्य से की जाने वाली शांत एवं गंभीर बातचीत की आवश्यकता होती है। संवैधानिक शासन के लिए सार्थक संवाद विशेष रूप से ऐसे समय में अनिवार्य है, जब भारतीय समाज, अर्थव्यवस्था और राजनीति को आगे ले जाने वाले सिद्धांतों को लेकर गहरे वैचारिक मतभेद मौजूद हों। संविधान और उसके मूल्य इन वैचारिक विभाजनों के बीच सामंजस्य बिठाने का आधार प्रदान करते हैं। ऐसा सामंजस्य इसलिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि दुनिया बेहद तेजी वाले तकनीकी बदलावों के दौर से गुजर रही है और भारत गंभीर रणनीतिक चुनौतियों से भी घिरा हुआ है।

आधुनिक भारत और नेहरू, गांधी परिवार की विरासत

इन दिनों नेहरू–गांधी परिवार सुर्खियों में है। सोनिया गांधी की किताब–शेडिलॉन्गिंगरू ए जर्नी ऑफ लवश से जुड़ी हलचल ने लोगों का ध्यान परिवार की तरफ खींचा है। पेंगुइन के टालमटोल के बाद नए प्रकाशक ने किताब छापने का फैसला किया। उस वक्त बताया गया कि किताब की एक लाख प्रतियां प्रकाशित की जाएंगी। 16 नवंबर को नई दिल्ली में लॉन्चिंग पर प्रकाशक हार्पर कॉलिन्स इंडिया के सीईओ अनंत पद्मनाभन ने बताया कि एक सप्ताह में पुस्तक की दो लाख प्रतियां बिक चुकी हैं। पश्चिमी देशों में किसी पुस्तक की दस–बीस लाख प्रतियां बिकना बड़ी बात नहीं है। भारत में किताबें पढ़ने में लोगों की दिलचस्पी ज्यादा नहीं है। इसलिए यह संख्या हैरान करती है। किताब खरीदने वाले लोगों में बड़ी संख्या कांग्रेस नेताओं, कार्यकर्ताओं की भी होगी। फिर भी, किसी शख्सियत के संस्मरण या आत्मकथ्य के प्रति लोगों की उत्सुकता पहले कभी इतनी ज्यादा नहीं देखी गई थी। सोनिया की किताब पर उठी चर्चा के कई कारण हैं। पेंगुइन के टालमटोल के बाद मीडिया में अनुमान लगाए गए। अखबारों ने किताब के अंशों का प्रकाशन शुरू कर दिया। अभी हाल के वर्षों में किसी किताब के इतने ज्यादा अंश मीडिया में नहीं आए हैं। किताब पर सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी की प्रतिक्रिया ने भी लोगों की उत्सुकता जगाई है। यों भी, बीते 12–13 वर्षों से नेहरू–गांधी परिवार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा के निशाने पर हमेशा रहता है। कांग्रेस के कार्यकर्ता जवाहर लाल नेहरू को जितना याद नहीं करते हैं, उससे ज्यादा तो भाजपा के नेता उनका नाम लेते हैं। मोदी ने संसद में कई बार नेहरू पर तीखे प्रहार किए हैं। उनके कथनों, आर्थिक नीतियों, विदेश नीति की कड़ी आलोचना की गई है। नेहरू के खिलाफ सुनियोजित अभियान चलाया गया है। बयानों के अलावा मीम्स, ट्रोल्स के जरिये उनका उपहास उड़ाया जाता है। भारत की तमाम सामाजिक, आर्थिक समस्याओं के लिए उन्हें दोषी ठहराया जाता है। नेताओं के अलावा अर्थशास्त्रियों, विश्लेषकों और विद्वानों की फौज नेहरू की नीतियों की समीक्षा करती है। इतिहास के हर दौर में राजनेताओं और समाज को प्रभावित करने वाली हस्तियों, संगठनों के कामकाज, फैसलों का मूल्यांकन होता है। उनके सही, गलत निर्णयों और उपलब्धियों की वस्तुनिष्ठ समीक्षा होती है। ऐसा होना भी चाहिए। इससे भविष्य के लिए नई दिशा मिलती है। लेकिन, नेहरू,गांधी खानदान की आलोचना के मामले में बहुत बार ऐसा नहीं हो रहा है। आधुनिक भारत में सत्ता पर लंबे समय तक रहने वाले परिवार के मामले में अलग मापदंड अपनाए गए हैं। अब निशाने पर सबसे अधिक राहुल गांधी हैं। उन्हें पप्पू, नामदार, शहजादे, अपरिपक्व सहित कई अन्य उपाधियों से विभूषित किया गया है। उन्हें देश विरोधी बताया जाता है। राहुल की विदेश यात्राओं से पहले उनके खिलाफ भाजपा के बयान आने लगते हैं। राहुल के कुछ बयान असहज करते हैं। लेकिन अब उनमें परिपक्वता नजर आती है। उनके साथ एक समृद्ध राजनीतिक परिवार की विरासत जुड़ी है। उन्हें अच्छा लॉन्च पैड मिला था। उन्होंने अपनी सक्रियता और चुनाव प्रक्रिया में धांधली जैसे मुद्दों को उठाकर एक मजबूत और असरदार विपक्षी नेता के रूप में अलग पहचान बना ली है। सोनिया की किताब में लोगों की दिलचस्पी केवल सोनिया के कारण नहीं है। भारत के इतिहास में नेहरू, गांधी परिवार की अमिट छाप को भुलाना मुश्किल है। स्वाधीनता संग्राम और फिर आजादी के बाद देश की सार्वजनिक गतिविधियां इस परिवार के आसपास केंद्रित रही हैं। खानदान में दो व्यक्तित्व सबसे अहम हैं। एक हैं– जवाहर लाल नेहरू और दूसरी हैं–उनकी बेटी इंदिरा गांधी। भारत के वर्तमान स्वरूप में नेहरू की बेहद महत्वपूर्ण भूमिका है। आधुनिक भारत की स्थिति पर गौर करते हुए नेहरू के योगदान को नहीं भूलना चाहिए। नई पीढ़ी शिक्षा, साइंस, टेक्नालॉजी, रिसर्च, मेडिकल साइंस, आईटी, कृषि, औद्योगिक विकास सहित कई क्षेत्रों में भारत की तेज रफ्तार को महसूस करती है। उसके पीछे नेहरू की सोच, दृष्टि और कल्पना मौजूद है। आजादी के संग्राम में साढ़े नौ वर्ष तक जेल में रहे नेहरू ने विकास के सभी पहलुओं को ध्यान में रखा था। उनके दौर में सार्वजनिक क्षेत्र में 50 से अधिक बड़े संस्थानों की नींव रखी गई। इनमें कुछ प्रमुख हैं, जीवन बीमा निगम, तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग, इंडियन ऑयल, भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड, हिंदुस्तान मशीन टूल्स। शिक्षा, कला, संस्कृति। की तरफ भी उनका झुकाव था। कई संस्थाएं उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की तस्वीर पेश करती हैं। संगीत नाटक अकादमी, साहित्य अकादमी, ललित कला अकादमी, नेशनल म्यूजियम, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, फिल्म इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया जैसे संस्थानों ने उनकी पहल से आकार लिया। नेहरू के सपनों का संसार अंतरिक्ष की ऊंचाइयों से होड़ करता था। उन्हें विरासत में गरीब और समस्याग्रस्त देश मिला था। विभाजन की विभीषिका ने देश के मानस पर गहरे जख्म किए थे। उन्होंने ऐसे समय में देश के घावों पर मरहम रखने के साथ उसकी तरक्की का योजनाबद्ध अभियान हाथ में लिया। भाखड़ा नंगल बांध की शुरुआत करते हुए नेहरू ने उसे आधुनिक भारत का तीर्थ कहा था। नेहरू ने भाखड़ा से साथ हीराकुंड, नागार्जुन सागर, दामोदर वैली, रिहंद बांध, तुंगभद्रा, कोसी और चंबल जैसी बांध योजनाओं को धरातल पर उतारा। नेहरू की दृष्टि तरक्की के हर क्षितिज को स्पर्श करती है। अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र और एम्स के साथ उनकी प्राथमिकता में नेशनल बुक ट्रस्ट, यूजीसी और एनसीईआरटी भी थे। भारत ने आज आईटी, फार्मास्युटिकल्स और ऑटोमोबाइल के क्षेत्र में खास पहचान बनाई है। इन सबके पीछे नेहरू के अनंत सपनों की दुनिया है। गूगल के सुंदर पिचई जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की दिग्गज हस्तियां भारत के आईआईएम, आईआईटी की देन हैं। कुछ साल पहले देश में स्मार्ट सिटी की बहुत चर्चा थी। नेहरू ने चंडीगढ़ के रूप में देश के सामने स्मार्ट सिटी की परिकल्पना पेश कर दी थी। नेहरू के दौर में भारत गरीब था। फिर भी, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उसकी आवाज बहुत प्रभावशाली थी।

आर्थिक संकट का सच

कांग्रेस सांसद राहुल गांधी जब भी विदेश यात्रा पर जाते हैं भाजपा का रक्तचाप बढ़ जाता है। राहुल गांधी अगर निजी यात्रा पर जाते हैं तो भाजपा की मांग रहती है कि वो अपनी निजता को छोड़ सार्वजनिक तौर पर बताएं कि वो कहां जा रहे हैं, क्यों जा रहे हैं और किससे मिल रहे हैं। हालांकि सरकार भाजपा की ही है तो उसे पता रहता है कि राहुल गांधी कब जा रहे हैं, किस फ्लाइट से जा रहे हैं, कहां जा रहे हैं, कब लौट रहे हैं आदि। लेकिन फिर भी बात का बतंगड़ बनाने के लिए वह ये सवाल उठाती है। वहीं राहुल गांधी जब बतौर नेता प्रतिपक्ष विदेश यात्रा पर जाते हैं, तब तो भाजपा की तकलीफ और ज्यादा बढ़ जाती है। क्योंकि तब राहुल वैश्विक मंचों से अपनी बात रखते हैं। अभी अमेरिका की कोलम्बिया और शिकागो यूनिवर्सिटी में चर्चा और व्याख्यान के लिए राहुल गांधी को बुलाया गया था। दोनों ही जगह उन्होंने छात्रों से और समाज के अन्य तबकों के प्रतिनिधियों से खुली चर्चा की। लोकतंत्र, भारत में चुनाव चोरी, एसआईआर की गड़बड़ियां, जेन जी आंदोलन, दिल्ली का बढ़ता प्रदूषण, बेरोजगारी, महंगाई तमाम मुद्दों पर उन्होंने खुल कर अपनी बात रखी। 17 नवंबर को न्यूयॉर्क स्थित कोलंबिया यूनिवर्सिटी में अपने संबोधन के दौरान राहुल गांधी ने भारतीय अर्थव्यवस्था, बेरोजगारी और लोकतांत्रिक संस्थाओं को लेकर जो बयान दिए, उन पर देश में राजनीतिक विवाद शुरू हो चुका है। दरअसल राहुल गांधी ने कहा था कि भारत एक श्आर्थिक आपदाश की कगार पर है और देश में बड़े पैमाने पर बेरोजगारी व शिक्षा व्यवस्था की गंभीर समस्याएं हैं। उन्होंने दावा किया कि भारत का आर्थिक मॉडल करीब एक दशक पहले ही नतीजे देना बंद कर चुका है और इसी क्रम में राहुल ने श्मेक इन इंडियाश्च तथा श्स्टार्ट–अप इंडियाश जैसी योजनाओं की सफलता पर सवाल उठाए। राहुल ने कहा कि एक के बाद एक मोदी की सारी योजनाएं विफल साबित हुई हैं। क्योंकि देश में विनिर्माण क्षेत्र उस स्तर पर नहीं पहुंचा है, जहां बड़ी संख्या में रोजगार पैदा हो सकें। कांग्रेस ने आर्थिक विकास का जो मॉडल बनाया था, जिसमें लघु और मध्यम उद्योगों, कृषि, सार्वजनिक निकायों आदि के लिए जो दीर्घकालिक योजनाएं बनाई जाती थीं, वो अब खत्म हो गया है। उन्होंने उद्योग और व्यापार में एकाधिकार होने पर भी चिंता जताई। राहुल ने इस मुद्दे को भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना से जोड़ा। उनका कहना था कि अगर आर्थिक विकास का लाभ समाज के बड़े हिस्से तक नहीं पहुंचता और छोटे कारोबार कमजोर होते हैं तो रोजगार तथा आर्थिक अवसरों का संकट बना रहेगा।



राहुल गांधी ने कोई ऐसी बात नहीं कही जो वे पहले भारत के मंचों से न कह चुके हों। संसद से लेकर चुनावी सभाओं या छात्रों की गूंज जैसे कार्यक्रमों में राहुल जहां भी जाते हैं, वे इस बात पर लोगों को आगाह करते हैं कि मोदी सरकार ने निजीकरण के नाम पर सब कुछ केवल दो लोगों मुकेश अंबानी और गौतम अडानी को सौंप दिया है।

तुलसी पूजन



तुलसी पूजन कर रहे, आज सकल संसार।
कृपा मिले जो मात की, महके जीवन द्वार।।

तुलसी से आँगन खिले, श्रद्धा के मधुमास।
हरित पात में बस रहा, ईश्वर का विश्वास।।

तुलसी चौरा पूजकर, दीप जलाएँ आज। घर–आँगन पावन रहे, मंगल हों सब काज

तुलसी माता की कृपा, करती भव से पार।
जिस घर तुलसी वास है, खुशियों की बौछार।।

तुलसी की पावन छटा, मन में भरे उजास।
भक्ति भाव से जुड़ रहे, जन–जन के विश्वास।।

तुलसी हर आँगन रहें, हरि का हो गुणगान। तुलसी चरणों में मिले, भक्तों को सम्मान।।

तुलसी मातृ कृपा रहे, निर्मल हो व्यवहार। शीतलता ऐसी मिले, मिटे हृदय विकारल

उमा मिश्रा 'प्रीति'

संस्थागत अधिकार के सम्मान का क्षरण भारतीय लोकतंत्र की नींव के लिए खतरा

के रवींद्रन

भारत के सर्वोच्च न्यायालय के भीतर और बाहर जो असाधारण दृश्य देखने को मिल रहे हैं, वे देश की लोकतांत्रिक संस्थाओं में पनपी एक गहरी समस्या की चिंताजनक निशानी हैं। भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी करने के बाद एक वकील को अदालत कक्ष से बाहर निकाले जाने का नजारा, केवल न्यायिक मर्यादा के उल्लंघन की एक अकेली घटना नहीं है। केरल में सत्ताधारी दल के नेतृत्व से जुड़ी अवमानना की कार्रवाई की पृष्ठभूमि में हुई यह घटना, संवैधानिक अधिकार के प्रति घटते सम्मान और इस क्षरण के कारणों पर कई असहज सवाल खड़े करती है। 16 नवंबर की घटना, जिसमें एक वकील ने कथित तौर पर मुख्य न्यायाधीश की ईमानदारी और उनके पद पर बने रहने की योग्यता पर सवाल उठाए, पेशेवर असहमति की जायज सीमाओं को पार कर गई। इसके बाद सर्वोच्च न्यायालय बार एसोसिएशन ने अवमानना की कार्रवाई की मांग की, और अटॉर्नी जनरल ने भी इस कार्रवाई को शुरू करने के लिए अपनी सहमति दे दी। इससे पहले, सर्वोच्च न्यायालय ने मुख्य न्यायाधीश को निशाना बनाने वाली एक सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर केरल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारियों को अवमानना का नोटिस जारी किया था। पार्टी का कहना था कि वह संदेश नेतृत्व की अनुमति के बिना प्रकाशित किया गया था, और बाद में उन्होंने इसके लिए माफी भी मांगी। इन परिस्थितियों पर विचार करना जरूरी है, खासकर इसलिए क्योंकि अवमानना के आरोपों और किसी को दोषी ठहराए जाने के बीच फर्क करना आवश्यक है। एक समय था जब अदालत के शिष्टाचार से थोड़ा सा भी विचलन न्यायिक गरिमा का अपमान माना जाता था। वकील बहुत सम्मान के साथ पीठ (बेंच) के सामने अपनी बात रखते थे, और न्यायिक फैसलों पर असहमति को आमतौर पर स्थापित कानूनी प्रक्रियाओं के जरिए ही व्यक्त किया जाता था। अदालत कक्ष को एक ऐसी जगह माना जाता था जहां व्यक्तियों के बजाय तर्कों का महत्व अधिक होता था। आज के टकरावपूर्ण सार्वजनिक माहौल में यह परंपरा कमजोर पड़ गई है, जहां राजनीतिक बयानबाजी, व्यक्तिगत आरोपों और सोशल मीडिया अभियानों के जरिए अक्सर संस्थागत अधिकारों को चुनौती दी जाती है। फिर भी, इस गिरावट के लिए पूरी तरह से गैर–जिम्मेदार वकीलों, राजनेताओं या अनियंत्रित जनता को जिम्मेदार ठहराना बहुत ही सरल सोच होगी। किसी संस्था के प्रति सम्मान को केवल औपचारिक परंपराओं, अनुशासनात्मक शक्तियों या संवैधानिक दर्जे के सहारे हमेशा के लिए बनाए नहीं रखा जा सकता। इसके लिए लगातार सही आचरण, पारदर्शिता, निष्पक्षता और उन सिद्धांतों के प्रति अटूट प्रतिबद्धता दिखानी पड़ती है, जो उस संस्था के अस्तित्व को सही ठहराते हैं। यह बात संसद और कार्यपालिका पर उतनी ही लागू होती है, जितनी कि संवैधानिक निकायों और न्यायपालिका पर। न्यायपालिका एक अत्यंत संवेदनशील स्थिति में होती है, क्योंकि उस पर मौलिक अधिकारों की रक्षा करने, संविधान की व्याख्या करने और सरकार के अन्य अंगों की मनमानी पर रोक लगाने की जिम्मेदारी होती है। लोकतांत्रिक व्यवस्था के बने रहने के लिए न्यायपालिका की स्वतंत्रता अनिवार्य है। इसका मतलब यह नहीं है कि जब कोई फैसला किसी राजनीतिक दल या किसी वादी को निराश करे, तो न्यायपालिका को डराया–धमकाया जाए। अदालतें धमकियों, सुनियोजित दबाव या व्यक्तिगत निंदा के माहौल में काम नहीं कर सकतीं। न्यायपालिका की स्वतंत्रता के लिए ऐसे व्यवहार से सुरक्षा जरूरी है। वहीं दूसरी ओर, फैसलों, प्रशासनिक कार्यप्रणालियों और संस्थागत व्यवस्थाओं की तर्कपूर्ण आलोचना करना संवैधानिक लोकतंत्र का एक अहम हिस्सा है। आलोचना और डराने–धमकाने के बीच का फर्क स्पष्ट होना चाहिए, खासकर तब जब खुद न्यायपालिका को यह तय करना हो कि क्या अदालत की अवमानना हुई है। भारत की न्यायपालिका के सामने ऐसी चुनौतियां हैं जो केवल अदालती कार्रवाई तक सीमित नहीं हैं। लंबित मामलों का भारी बोझ, लंबे समय तक चलने वाले मुकदमे, खाली पद, कानूनी प्रतिनिधित्व तक असमान पहुंच और न्याय पाने का आर्थिक बोझकृइन सबने जनता के बीच निराशा पैदा की है। एक आम नागरिक के लिए, किसी संस्था की विश्वसनीयता इस बात से नहीं मापी जाती कि संविधान के बारे में क्या–क्या कहा जा रहा है, बल्कि इस बात से मापी जाती है कि क्या उसे समय पर और किफायती न्याय मिल सकता है। जो व्यवस्था सर्वोच्च स्तर पर मौलिक स्वतंत्रता की रक्षा करने में सक्षम है, उसे उन लोगों के लिए भी सुलभ होना चाहिए जो निचली अदालतों में सालों से कानूनी कार्रवाई से जूझ रहे हैं। बड़ी समस्या यह है कि संस्थागत साख में गिरावट भारत की राजनीतिक और प्रशासनिक संस्कृति की एक विशेषता बन गई है। संसद, जिसे कभी राष्ट्रीय विचार–विमर्श का मुख्य केंद्र माना जाता था, अब अक्सर ऐसे टकरावों का गवाह बनती है जो कानूनों की गहन जांच–परख को पीछे धकेल देते हैं। जांच एजेंसियों का कामकाज भी संस्थागत बहस का एक विवादास्पद मुद्दा बन गया है। अलग–अलग राजनीतिक विचारधारा वाली सरकारों के दौर में, चुनिंदा लोगों पर कार्रवाई करने, राजनीतिक कारणों से जांच करने और अलग–अलग लोगों के साथ अलग–अलग व्यवहार करने के आरोप लगते रहे हैं। चुनाव आयोग, स्वायत्त नियामक संस्थाओं, विश्वविद्यालयों और प्रशासनिक तंत्र के कुछ हिस्सों को लेकर भी ऐसी ही चिंताएं हैं। इन संस्थाओं की वैधता उनकी पेशेवर स्वतंत्रता और जनता के भरोसे से आती है। जब नियुक्तियों, फैसलों या हस्तक्षेपों को मुख्य रूप से राजनीतिक नफे–नुकसान के नजरिए से देखा जाने लगता है, तो इन संस्थाओं की साख कमजोर हो जाती है। विभिन्न सरकारों ने इन संस्थाओं को अपनी सुविधा के साधन के रूप में इस्तेमाल करने की कोशिश करके इन दबावों को और बढ़ाया है। राजनीतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया का लगातार केंद्रीकृत होना इस समस्या को और गंभीर बनाता है। जब सत्ता कुछ गिने–चुने नेताओं के एक छोटे से दायरे में सिमट जाती है, तो संस्थाओं के भीतर असहमति जताने, नौकरशाही में खुलकर अपनी बात रखने और स्वतंत्र पेशेवर राय देने की गुंजाइश कम हो जाती है। हालांकि, विपक्ष भी जांच–परख से नहीं बच सकता, खासकर तब जब वह संवैधानिक मुद्दों पर तर्कपूर्ण चर्चा करने के बजाय व्यक्तिगत हमलों का सहारा लेता है। टेक्नालॉजी ने इस गिरावट को और तेज कर दिया है। सोशल मीडिया जटिल न्यायिक और प्रशासनिक सवालों को भड़काऊ नारों में बदल देता है, जिससे अक्सर असहमति और गाली–गलौज के बीच का फर्क ही मिट जाता है। राजनीतिक संगठन अब ऐसे माहौल में संवाद करते हैं जहां सटीकता के बजाय गुस्से और आक्रोश को बढ़ावा मिलता है।

10वीं में देखा था हीरोइन बनने का सपना

अदा शर्मा



सिनेमा जगत के लोकप्रिय फेस्टिवल यानी जागरण फिल्म फेस्टिवल 2026 (श्रथ्ध डनउइंप 202 के मुंबई संस्करण का आगाज आज 28 अक्टूबर से हो गया है। जेएफ कुनिया का सबसे बड़ा ऐसा फिल्म मेला है, जो एक शहर से दूसरे शहर घूमता है। अब इसका कारवां मायानगरी आ पहुंचा है और फिल्म महोत्सव के पहले दिन सिनेमा जगत के तमाम सितारों का जमावड़ा भी यहां देखने को मिला है। इस दौरान हिंदी सिनेमा की मशहूर अभिनेत्री अदा शर्मा (।की

फेस्टिवल का समापन मुंबई एडिशन के साथ होना है। इसे खास बनाने के लिए जागरण समूह की तरफ से खास तैयारियां की गई हैं। इस समारोह के पहले दिन अभिनेत्री अदा शर्मा की मौजूदगी ने इसमें चार चांद लगाए। इस दौरान अदा ने कई मामले पर अपनी राय रखते हुए बताया है– सबसे पहले बात ये ही कि जागरण फिल्म फेस्टिवल मुंबई का हिस्सा बनकर मैं काफी खुश हूं। यहां आना बाकी एक अलग अनुभव देता है। आज मेरा लुक द केरल स्टोरी फिल्म के कैरेक्टर से काफी मिल रहा है, जिसका अंदाजा आप मेरे बालों में लगे फूलों को देखकर आसानी से लगा सकते हैं। फिल्म करियर को लेकर बोलीं अदा जागरण फिल्म फेस्टिवल मुंबई के दौरान अदा शर्मा के इंटरव्यू के दौरान उनसे फिल्मों में करियर बनाने को लेकर सवाल पूछा गया।

ौंतउं) ने जागरण फिल्म फेस्टिवल मुंबई एडिशन के पहले दिन बतौर गेस्ट मौजूद रहीं। इस दौरान अदा ने अपने सिनेमाई सफर और अन्य कई पहलुओं पर खुलकर बात की है। जागरण फिल्म फेस्टिवल मुंबई में अदा शर्मा हर साल की तरह इस बार भी जागरण फिल्म फेस्टिवल का समापन मुंबई एडिशन के साथ होना है। इसे खास बनाने के लिए जागरण समूह की तरफ से खास तैयारियां की गई हैं। इस समारोह के पहले दिन अभिनेत्री अदा शर्मा की मौजूदगी ने इसमें चार चांद लगाए। इस दौरान अदा ने कई मामले पर अपनी राय रखते हुए बताया है– सबसे पहले बात ये ही कि जागरण फिल्म फेस्टिवल मुंबई का हिस्सा बनकर मैं काफी खुश हूं। यहां आना बाकी एक अलग अनुभव देता है। आज मेरा लुक द केरल स्टोरी फिल्म के कैरेक्टर से काफी मिल रहा है, जिसका अंदाजा आप मेरे बालों में लगे फूलों को देखकर आसानी से लगा सकते हैं। फिल्म करियर को लेकर बोलीं अदा जागरण फिल्म फेस्टिवल मुंबई के दौरान अदा शर्मा के इंटरव्यू के दौरान उनसे फिल्मों में करियर बनाने को लेकर सवाल पूछा गया, जिस पर एक्ट्रेस ने कहा है– पहले से ही मैंने ये तय कर लिया था कि मुझे एक्ट्रेस बनना है। जब मैंने 10वीं की परीक्षा पास की तो ये ठान लिया था कि सिनेमा जगत में करियर बनाऊंगी। हालांकि, एक्टिंग का थोड़ा सा आइडिया था, लेकिन बाकी किसी भी चीज के बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं थीं। सब कुछ मैंने यहीं आकर ही सीखा है। मणिपुर फाइल्स पर क्या बोलीं अदा शर्मा? इस बीच, एक पत्रकार के सवाल का जवाब देते हुए अदा शर्मा ने 'मणिपुर फाइल्स' जैसी फिल्म बनाए जाने को लेकर अपनी राय रखी। उन्होंने कहा– अगर मणिपुर में अन्याय हुआ है, तो उन घटनाओं को सामने लाया जाना चाहिए। यदि उन घटनाओं पर कोई अच्छी कहानी है, तो 'मणिपुर फाइल्स' जैसी फिल्म जरूर बननी चाहिए।



वरुण धवन ने सिद्धार्थ मल्होत्रा और कियारा आडवाणी के साथ शुक्रवार को एक तस्वीर शेयर की। तस्वीर में वरुण सेल्फी ले रहे हैं और कियारा दोनों एक्टर्स के बीच खड़ी दिख रही हैं। वरुण ने तस्वीर के साथ लिखा, "हीटेड, हां, लेकिन अपने भाई के साथ कभी राइवलरी नहीं रही। हॉस्पिटैलिटी के लिए शुक्रिया, भाभी जी।" सिद्धार्थ ने भी पोस्ट शेयर करते हुए लिखा, "भाई, तुम हमेशा मेरी पहली पसंद रहोगे।" वरुण और सिद्धार्थ ने 2012 में करण जौहर की फिल्म 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' में साथ काम किया था। तस्वीर को लेकर करण जौहर का रिएक्शन भी सामने आया। उन्होंने अपनी स्टोरी में लिखा, "रोहन और अभिमन्यु! कैसी टक्कर है! लेकिन दोस्ती जिंदगी भर की है।" फैन्स ने वरुण की पोस्ट पर मजेदार प्रतिक्रियाएं दीं। एक फैन ने लिखा, "सिड और रोहन का रीयूनियन 2012 जैसा ही लग रहा है।" एक अन्य कमेंट में लिखा गया, "कोई राइवलरी नहीं, सिर्फ भाईचारा।" कुछ फैन्स ने दोनों एक्टर्स को फिर बड़े पर्दे पर साथ देखने की इच्छा जताई।



श्रद्धा कपूर इन दिनों फिल्म ईठा की रिलीज को लेकर चर्चा में हैं, जिसमें अभी थोड़ा वक्त है. लेकिन फिल्म का ट्रेलर 30 अक्तूबर को रिलीज कर दिया गया है. इसे दर्शकों की ओर से काफी पसंद किया जा रहा है. फिल्म के ट्रेलर में श्रद्धा के काम की जमकर तारीफ की जा रही है. लोगों का कहना है कि ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सारे रिकॉर्ड्स को तोड़ सकती है. ऐसे में अब श्रद्धा कपूर ने भी बॉक्स ऑफिस रिकॉर्ड्स को लेकर बात की और बताया कि इंडस्ट्री को ऐसी ही मजबूत कहानियों की जरूरत है. उनका मानना है कि बॉक्स ऑफिस तो छोटी सोच है बल्कि इंडस्ट्री के बारे में सोचना चाहिए. चलिए बताते हैं एक्ट्रेस ने आगे क्या कहा. श्रद्धा कपूर ने बताया 2 साल में करती हैं एक फिल्म दरअसल, श्रद्धा कपूर ईठा के ट्रेलर लॉन्चिंग इवेंट में पहुंची थीं. फिल्म का ट्रेलर लॉन्चिंग इवेंट मुंबई में रखा गया था और इस दौरान उनके साथ दिनेश विजन, लक्ष्मण उतेकर और रणदीप हुड्डा समेत अन्य मेंबर्स भी पहुंचे थे. इस दौरान एक्ट्रेस और बाकी टीम के सदस्यों से सवाल जवाब किया गया था. इसी बीच फिल्म की सक्सेस को लेकर बॉक्स ऑफिस रिकॉर्ड्स के बारे में सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि इंडस्ट्री के बारे में सोचना चाहिए. श्रद्धा कपूर ने बॉक्स ऑफिस पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा, मुझे कभी नहीं लगता कि मैंने कुछ तोड़ा है या बॉक्स ऑफिस पर कुछ किया है. मैंने कुछ नहीं किया है. जैसा की मुझे पहले पूछा गया था कि आपको अच्छी कहानियां मिलती हैं या फिर ढूंढती हैं? मुझे बस उससे मतलब होता है. इसलिए कभी–कभी दो साल में एक फिल्म आ जाती है मेरी. तो मेरा मतलब सिर्फ उससे ही रहता है और मुझे सच में ऐसा नहीं लगता है कि महिला या पुरुष प्रधान फिल्म है. ये बहुत छोटी सोच है... श्रद्धा आगे कहती हैं, हमारी इंडस्ट्री को अच्छी कहानियों की जरूरत है और अच्छी कहानियां बननी चाहिए.



'ये प्रेम मोल लिया' के लिए आयुष्मान ही थे सूरज बड़जात्या की पसंद, बोले- पहले दिन ही समझ गए थे किरदार

सूरज आर. बड़जात्या की फिल्म 'ये प्रेम मोल लिया' रिलीज से पहले ही चर्चा में है। फिल्म के ट्रेलर को मिल रही प्रतिक्रिया के बीच अब निर्देशक ने आयुष्मान खुराना की कास्टिंग को लेकर एक दिलचस्प खुलासा किया है। सूरज बड़जात्या ने बताया कि प्रेम के किरदार के लिए उन्होंने किसी दूसरे अभिनेता के बारे में सोचा ही नहीं था। कहानी सामने आते ही उनके मन में आयुष्मान का नाम आया था। निर्देशक का मानना है कि अभिनेता की सोच और सामाजिक मुद्दों को सहजता से पर्दे पर रखने की क्षमता इस किरदार के लिए बिल्कुल सही है।

ट्रेलर लॉन्च के दौरान सूरज बड़जात्या ने कहा कि फिल्म का प्रेम अपने सरल और कोमल स्वभाव के जरिए कुछ जरूरी सवाल उठाता है। ऐसे किरदार के लिए उन्हें आयुष्मान की शख्सियत सबसे उपयुक्त लगी। उन्होंने कहा, "इस फिल्म का प्रेम अपने कोमल अंदाज में कुछ सवाल उठाता है। जब यह विषय मेरे पास आया, तो मेरे मन में सिर्फ आयुष्मान ही थे। अगर आप उनकी फिल्मोग्राफी और उन्हें व्यक्तिगत तौर पर देखें, तो आयुष्मान का अपना एक नजरिया है और वह उसे कितनी सहजता से व्यक्त करते हैं।" सूरज बड़जात्या ने बताया कि आयुष्मान ने शूटिंग के पहले दिन ही प्रेम के किरदार को अच्छी तरह आत्मसात कर लिया था। अभिनेता की समझ और अभिनय से निर्देशक इतने प्रभावित हुए कि उन्हें किरदार में किसी तरह का हस्तक्षेप करने की जरूरत महसूस नहीं हुई। उन्होंने कहा, "पहले दिन जब मैंने आयुष्मान को देखा, तो मुझे लगा कि उन्होंने प्रेम के सार को इतनी अच्छी तरह समझ लिया है कि मैं उसमें कोई हस्तक्षेप नहीं करना चाहता था।" फिल्म का ट्रेलर सामने आने के बाद से ही दर्शक इसकी तुलना राजश्री प्रोडक्शंस की पारिवारिक फिल्मों के अंदाज से कर रहे हैं। इसमें आयुष्मान और शरवरी की नई जोड़ी के साथ हिमेश रेशमिया का संगीत भी लोगों का ध्यान खींच रहा है। शादी, परिवार और रिश्तों के इर्द–गिर्द बुनी कहानी को दर्शकों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है। सोशल मीडिया पर कई यूजर्स ने ट्रेलर को बॉलीवुड में पारिवारिक मनोरंजन की कमी पूरी करने वाला बताया है। वहीं, आयुष्मान के किरदार को सहज और भरोसेमंद कहकर पसंद किया जा रहा है। आयुष्मान खुराना के लिए प्रेम का किरदार निभाना एक खास अनुभव है। उन्होंने इस भूमिका को स्वीकार करते हुए राजश्री की विरासत के प्रति सम्मान जताया है। अभिनेता ने सलमान खान को श्ओजी प्रेमश कहा और इस प्रतिष्ठित किरदार को अपने अंदाज में आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी को भी समझा। फिल्म में उनका किरदार परंपराओं को मानने के साथ–साथ उन पर सवाल उठाता भी दिखाई देगा। सूरज आर. बड़जात्या के निर्देशन में बनी इस फिल्म में आयुष्मान खुराना के साथ शरवरी मुख्य भूमिका में हैं। इसके अलावा अनुपम खेर, सुप्रिया पाठक कपूर, सीमा पाहवा, सौम्या टंडन, स्वानंद किरकिरे, श्रुति सेठ, शाद रंधावा, गिरीश कुलकर्णी और राजेश कुमार भी अहम किरदारों में नजर आएंगे। राजश्री प्रोडक्शंस और महावीर जैन फिल्म्स के सहयोग से बनी 'ये प्रेम मोल लिया' 27 नवंबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

ये प्रेम मोल लिया के ट्रेलर ने जीता दर्शकों का दिल, सूरज बड़जात्या के फैमिली एंटरटेनर की हो रही तारीफ

सूरज बड़जात्या एक बार फिर बड़े पर्दे पर परिवार, प्यार और रिश्तों की अहमियत को एक नई कहानी के साथ पेश करने जा रहे हैं। उनकी आगामी फिल्म ये प्रेम मोल लिया का ट्रेलर रिलीज हो चुका है। आयुष्मान खुराना और शरवरी वाघ स्टारर इस फिल्म की झलक ने दर्शकों को पुराने दौर के पारिवारिक सिनेमा की याद दिला दी है। ट्रेलर सामने आने के बाद से ही सोशल मीडिया पर फिल्म को लेकर चर्चा तेज हो गई है। खास बात यह है कि फिल्म की कहानी शादी और परिवार से जुड़े एक ऐसे विषय को उठाती है, जो आमतौर पर हिंदी फिल्मों में कम देखने को मिलता है। ये प्रेम मोल लिया की कहानी में रिश्तों को देखने का एक अलग नजरिया दिखाया गया है। फिल्म में शादी के बाद दूल्हे के दुल्हन के घर रहने की परंपरा को केंद्र में रखा गया है। इसके जरिए यह संदेश देने की कोशिश की गई है कि शादी के बाद किसी लड़की को अपना मायका छोड़कर दूसरे घर में बसने या दोनों परिवारों में से किसी एक को चुनने की मजबूरी नहीं होनी चाहिए। सूरज बड़जात्या ने इस विचार को पारिवारिक भावनाओं, आपसी समझ और प्यार के साथ पर्दे पर उतारा है। ट्रेलर रिलीज होते ही दर्शकों ने सोशल मीडिया पर अपनी प्रतिक्रियाएं देनी शुरू कर दी हैं। कई लोगों को इसमें पुराने जमाने की पारिवारिक फिल्मों वाली सादगी और अपनापन नजर आया। एक यूजर ने इसे ओजी फैमिली एंटरटेनर की वापसी बताया, तो दूसरे ने फिल्म के हर फ्रेम की खूबसूरती और भावनात्मक अंदाज की तारीफ की। एक दर्शक ने लिखा कि राजश्री के संस्कारों के साथ हिमेश रेशमिया का दिल छू लेने वाला संगीत फिल्म को खास बना रहा है और अब 27 नवंबर का इंतजार मुश्किल हो रहा है। वहीं, एक अन्य फैन ने कहा कि इस तरह की फिल्म बनाने का काम सिर्फ सूरज बड़जात्या ही कर सकते हैं। दर्शक को उम्मीद है कि यह फिल्म एक बार फिर परिवारों को एक साथ सिनेमाघरों तक लाने में कामयाब होगी। फिल्म के विषय को लेकर भी दर्शकों में उत्साह है। एक यूजर ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि शादी के बाद महिलाओं को मायके और ससुराल के बीच बंटकर रहने की सोच को बदलने की जरूरत है और फिल्म इसी दिशा में एक अच्छी पहल करती दिखाई दे रही है। वहीं, कुछ दर्शकों ने राजश्री की फिल्मों को भारतीय संस्कृति और पारिवारिक मूल्यों से जोड़ते हुए इसकी सराहना की है। ट्रेलर में शरवरी के लुक और उनके अंदाज को भी दर्शकों का खूब प्यार मिल रहा है। सोशल मीडिया पर कई लोगों ने उनके स्टाइल की तुलना 90 के दशक की बॉलीवुड अभिनेत्रियों से की है। एक यूजर के मुताबिक, शरवरी का अंदाज पुराने दौर की खूबसूरत यादें ताजा कर देता है। वहीं, आयुष्मान खुराना भी प्रेम के किरदार में दर्शकों को पसंद आ रहे हैं। एक फैन ने फिल्म के बारे में लिखा कि राजश्री, प्रेम, हिमेश रेशमिया का संगीत और बड़ा परिवार, ये सभी चीजें मिलकर पुराने सिनेमा की याद दिलाती हैं।



उम्र के हिसाब से फॉलो करना चाहिए स्किन केयर रूटीन, लंबे समय तक जवां बनी रहेगी त्वचा

बढ़ती उम्र के साथ ही हमारी स्किन को खास देखभाल की जरूरत होती है। क्योंकि 30 की उम्र तक आते–आते हम अपनी त्वचा पर कई तरह के प्रोडक्ट का इस्तेमाल कर चुके होते हैं। जिसके चलते स्ट्रेस, पॉल्यूशन, सन–एक्सपोजर और बढ़ती उम्र के साथ हमारी स्किन अपनी मासूमियत खोने लगती है। ऐसे में हम सभी को अपनी स्किन का खास ख्याल रखना होता है। बता दें कि 30 की उम्र के आसपास त्वचा का ध्यान ना रखने पर झुर्रियों की समस्या भी शुरू होने लगती है। जिससे आपकी त्वचा का ग्लो और चार्म खोने लगता है। ऐसे में अगर आप भी 30 की उम्र के आसपास हैं तो आप अपने डेली रूटीन में कुछ ऐसी चीजों को शामिल कर सकती हैं, जो आपकी स्किन का ख्याल रखने में आपकी मदद करेंगी।

30 की उम्र में स्किन प्रॉब्लम्स

एक बार फिर से पिंपल्स का हावी होना

फाइन लाइन्स का हाइलाइट होना

चेहरे की स्किन में कसावट कम होना

त्वचा का डल और सैगी दिखना

चेहरे पर रिंकल्स का उभरना

ऐक्ने की समस्या का सामना

डार्क सर्कल दिखने लगना

ऐसे करें त्वचा की देखभाल

क्लिंजिंग है जरूरी

बढ़ती उम्र के साथ त्वचा को पहले से अधिक देखभाल की जरूरत होती है। इसलिए हमेशा रात को सोने से पहले अपने फेस को क्लींजर से जरूर साफ करें और फिर फेसवॉश करें। क्योंकि चेहरे से मेकअर हटाने के लिए क्लींजिंग जरूरी होता है। ऐसे में अगर आप क्लींजिंग को स्किप कर सीधे फेसवॉश करती हैं, तो यह स्किन रिएक्शन का कारण भी बन सकता है।

बॉडी वॉश

बता दें कि 30 की उम्र में अपने शरीर को पहले से ज्यादा हाइड्रेट रखना होता है। इसके लिए सिर्फ पानी काफी नहीं होता है। इसलिए नहाने के दौरान कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए। जैसे नहाने के दौरान 5 मिनट से ज्यादा शॉवर नहीं लेना चाहिए। स्किन पर बॉडी लोशन अप्लाई करना ना भूलें। वहीं नहाने के दो–तीन मिनट के अंदर बॉडी लोशन लगाने से स्किन को ज्यादा फायदा मिलता है और आपकी त्वचा लंबे समय सॉफ्ट बनी रहती है।

ना लें स्ट्रेस

बढ़ती उम्र के साथ जिम्मेदारियां बढ़ने लगती हैं और तनाव भी पहले से अधिक होता है। ऐसे में ज्यादा तनाव लेने पर इसका असर आपकी त्वचा पर साफ नजर आने लगता है। इसलिए आप रोजाना 8–10 गिलास पानी का सेवन करें और रोजाना 30 मिनट एक्सरसाइज व मेडिटेशन जरूर करें। इससे आप स्ट्रेस को काफी हद तक कंट्रोल कर सकती हैं। मेडिटेशन और एक्सरसाइज को रूटीन में शामिल करने से आपकी स्किन हेल्दी और ग्लोइंग बनेगी।

विटामिन सी

इसके साथ ही रात को सोने से पहले अपने फेस पर फेस सीरम या फिर विटामिन युक्त क्रीम अप्लाई करें। वहीं सुबह के समय सनस्क्रीन का इस्तेमाल करें। अगर आप दिन में भी विटामिन–सी सीरम लगाती है, तो पहसे अपनी स्किन पर सनस्क्रीन लगाएं और फिर विटामिन–सी युक्त सीरम व क्रीम लगाएं।



यूट्रस में रसौली होने के संकेत, क्या रसौली का इलाज सिर्फ बच्चेदानी निकालना ?

ऐसे बहुत से रोग है जो महिलाओं के पीरियड्स से जुड़े होते हैं और पीरियड्स की गड़बड़ी होने पर संकेत भी देते हैं। जैसे पीरियड्स के समय बहुत ज्यादा क्लोटिग यानि की खून की बनी गांठें बनना, दर्द होना आदि यह सब यूट्रस में रसौली होने के लक्षण हो सकते हैं। एक समय ऐसा था जब रसौली की समस्या उम्रदराज औरतों में ही सुनने को मिलती थी लेकिन आज तो हर उम्र की महिला को ये दिक्कतें आ रही हैं। चलिए इस आर्टिकल में रसौली से जुड़ी ही जानकारी आपको देते हैं। रसौलियां जिसे फाइब्रॉइड्स, यूट्रस सिस्ट, बच्चेदानी की गांठ भी कहा जाता । ऐसा होने की मुख्य वजह, महिला के शरीर में हार्मोनल गड़बड़ी है और हार्मोन्स की गड़बड़ी की वजह बिगड़ा हुआ लाइफस्टाइल है। छोटी उम्र में यह समस्या होना भी लाइफस्टाइल का खराब होना माना जाता है।

रसौली क्या हैं ?

रसौलियां यूट्रस या बच्चेदानी में फाइब्रस टिश्यूज से बनती है। महिला का गर्भाश्य तीन भागों में बंटा है और यह यूट्रस के किसी भी हिस्से में हो सकती है। जिसका साइज भी अलग–अलग हो सकता है। यह मटर के दाने से लेकर टैनिस बॉल के साइज की भी हो सकती है।च्नदरंइज्ञमेंतप

रसौली होने पर क्या–क्या दिक्कतें आती हैं?

रसौली होने पर महिला की प्रेगनेंसी में दिक्कत आती है। पीरियड के दौरान हैवी ब्लीडिंग–दर्द होता है। बार–बार मिसकैरेज हो सकता है। पीरियड्स अनियमित हो सकते हैं। इससे पेट के निचले हिस्से में बहुत ज्यादा दर्द, भारीपन महसूस होता है। इंटरकोर्स के समय दर्द होता है।बार–बार यूरिन पास होना और वेजाइना में बदबूदार डिस्चार्ज होना। हर समय कमजोरी महसूस होना, पैरों में दर्द होना और कब्ज की शिकायत भी रह सकती है।

क्या रसौली के बाद निकलवानी पड़ती है यूट्रस?

पहले इस बीमारी में जब यूट्रस निकालना ही एकमात्र इलाज माना जाता था लेकिन अब ऐसा नहीं है। डॉक्टर मरीज की रसौली का साइज देखकर उसी प्रकार से ट्रीटमेंट करते हैं। कई बार तो यह दवाइयों से ही ठीक हो जाती है जबकि कई बार सर्जरी की जरूरत पड़ती है लेकिन सर्जरी में यूट्रस नहीं निकाली जाती। मेनॉपॉज महिला को भी सर्जरी नहीं की जाती क्योंकि मेनोपॉज के बाद फाइब्रॉइड्स के टिश्यूज की ग्रोथ खुद–ब–खुद बंद हो जाती है। आपका लाइफस्टाइल सहीं होगा तो आपकी यूट्रस स्वस्थ रहेगी। जो भी खाएं हैल्दी खाएं।

ज्यादा पानी पीएं। वजन पर कंट्रोल रखें।

आंवला जूस– आंवला के एंटी ऑक्सीडेंट गुण यूट्रस में रसौलियां नहीं बनने देते। रोजाना सुबह आंवला का जूस में 1 चम्मच शहद डालकर खाली पेट पीने आपको फायदा मिलेगा।

ग्रीन टी– ग्रीन टी भी रसौली की कोशिकाओं को फैलने से रोकता है। इसके लिए रोज 2 से 3 कप ग्रीन टी का सेवन करें।

हल्दी– हल्दी में मौजूद एंटीबॉयोटिक गुण शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालने में मदद करते हैं। साथ ही इससे गर्भाश्य कैंसर का खतरा भी कम होता है।

लहसुन– खाली पेट 1 से 2 लहसुन की कलियों का सेवन करें। लगातार 2 महीने तक इसका सेवन इस समस्या को जड़ से खत्म कर देता है।

लाइफस्टाइल का हैल्दी होना बहुत जरूरी है। अच्छा खाएं और एक्सरसाइज व योग करें ताकि आप ऐसी समस्याओं से बची रहें। पैकेज अच्छा लगे तो इसे लाइक और शेयर करना ना भूलें।

डायबिटीज मरीजों के लिए वरदान ये फल, खाते ही कंट्रोल हो जाएगी ब्लड शुगर



डायबिटीज मरीजों के लिए मीठा खाना वर्जित होता है। यह मरीज जैसे ही कुछ मीठा खाते हैं तो उनका ब्लड शुगर हाई हो जाता है। लेकिन एक्सपर्ट्स हमेशा इन लोगों को ताजे फल और सब्जियों खाने की सलाह देते हैं इसके बाद भी कुछ लोगों को इस बात का कंफ्यूजन रहता है कि क्या इन मरीजों को मीठे फल से खाना चाहिए या नहीं? दरअसल डायबिटीज में ब्लड शुगर बढ़ने के कारण शुगर यानी की कार्बोहाइड्रेट है। भोजन में जब ज्यादा कार्बोहाइड्रेट वाली चीजें खाते हैं तो तेजी से ब्लड शुगर बढ़ने लगता है। लेकिन ज्यादातर फ्रूट्स में कार्बोहाइड्रेट की मात्रा बहुत ही कम होती है इसलिए यह जानना जरुरी है कि किस फल में कार्बोहाइड्रेट की मात्रा कम होती है और आप किनका सेवन कर सकते हैं....

किन फलों में कम होता है कार्बोहाइड्रेट?

एक्सपर्ट्स की मानें तो डायबिटीज के मरीज कोई भी फ्रूट खा सकते हैं लेकिन इस बात का ध्यान रखें कि आपको ऐसे फ्रूट का चयन ही करना चाहिए जिसमें 15 ग्राम से ज्यादा कार्बोहाइड्रेट न हो। इसके लिए यह देखना होगा कि किस फ्रूट में कितना कार्बोहाइड्रेट पाया जाता है। सेब के आधे भाग में 15 ग्राम कार्बोहाइड्रेट मौजूद होता है। इसलिए आधे से ज्यादा सेब एक दिन में आपको नहीं खाना चाहिए। वहीं आधा केला एक मध्यम आकार के संतरे और एक कप ब्लैकबेरी में 15 ग्राम कार्बोहाइड्रेट होता है। वेबएमडी के अनुसार, जिस फ्रूट में फाइबर की मात्रा ज्यादा है और जिसका ग्लाइसेमिक इंडेक्स 55 से कम हो। वह फ्रूट डायबिटीज के मरीजों को फायदा देगा। सेब, संतरा, केला, आम, खजूर इन सभी का ग्लाइसेमिक इंडेक्स 55 से भी नीचे हैं। इसलिए सीमित मात्रा में आप इन फलों का सेवन कर सकते हैं।

डायबिटीज के मरीज कौन–कौन से फल खा सकते हैं

साइट्रस फ्रूट

संतरा, नींबू, चकोतरा जैसे साइट्रस फ्रूट्स डायबिटीज मरीजों के लिए बेहद फायदेमंद होते हैं। इसमें कार्बोहाइड्रेट फैट बहुत कम पाया जाता है और फाइबर, मिनरल्स और विटामिन बहुत ज्यादा मात्रा में होता है। इसके साथ ही इन फलों में एंटीऑक्सीडेंट्स और एंटीडायबिटीक गुण पाए जाते हैं। ऐसे में आप इन फलों का सेवन कर सकते हैं।

शकरकंद

यह भी डायबिटीज के रोगियों के लिए बेहद लाभकारी होती है। इसमें मीठा बहुत होता है लेकिन इसका ग्लाइसेमिक इंडेक्स बहुत कम होता है और इसमें पाई जाने वाली शुगर धीरे–धीरे रिलीज होती है। शकरकंद में बहुत ज्यादा फाइबर होता है जो ब्लड शुगर कंट्रोल में रखता है।

बेरीज

ब्लूबेरी, स्ट्रॉबेरी सहित सारी बेरीज शुगर के मरीजों के लिए बेहद लाभकारी होती हैं। बेरीज में एंटीऑक्सीडेंट्स और फाइबर की मात्रा ज्यादा होती है। एक कप ब्लूबेरी में 84 कैलोरी और 21 ग्राम कार्बोहाइड्रेट होते हैं।

खुबानी

एक खुबानी में सिर्फ 17 कैलोरी और 4 ग्राम कार्बोहाइड्रेट पाए जाते हैं। चार छोटी खुबानी आपकी रोजाना की विटामिन–ए की जरुरत को 134 माइक्रोग्राम तक पूरा करते हैं। विटामिन–ए आपकी आंखों और इम्यून सिस्टम के लिए जरुरी है। वहीं यह फल फाइबर का अच्छा स्त्रोत है ऐसे में आप इसका सेवन कर सकते हैं।

सेब

ऐसी कहावत है कि–डॉक्टरों के पास जाने से बचना है तो रोज एक सेब खाएं। सेब एक कमाल का फ्रूट है जिसमें कई तरह के विटामिन, मिनरल्स और एंटीऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं। ये सब ब्लड शुगर कंट्रोल करते हैं सेब में कार्बोहाइड्रेट की मात्रा भी कम होती है। ऐशे में छोटा सेब आप लोग खा सकते हैं।

पपीता

पपीता भी शुगर के मरीजों के लिए काफी लाभकारी माना जाता है। इन सभी फलों में विटामिन, फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं इन सभी फलों का ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होता है।

आड़ू

डायबिटीज के रोगियों के लिए यह फल बहुत ही फायदेमंद है। एक आड़ू में 59 कैलोरी और 14 ग्राम कार्बोहाइड्रेट पाए जाते हैं इसमें 10 मिलीग्राम विटामिन–सी भी होता है जो इसे पोषक तत्व का अच्छा स्त्रोत माना जाता है और यह 285 मिलीग्राम के साथ पौटेशियम का भी अच्छा स्त्रोत है।



स्नैक्स के हैं शौकीन तो कच्चे आलू की बनाएं ये टेस्टी रेसिपी, मेहमान भी करेंगे तारीफ

अक्सर हमारे घर पर अचानक से जब मेहमान आ जाते हैं। तो कई बार हमें यह समझ नही आता कि उनको नाश्ते में क्या खिलाएं। अगर आप भी मेहमानों के लिए झटपट बन जाने वाली कोई रेसिपी की तलाश में हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपके साथ आलू की मदद से बनने वाले स्नैक्स की रेसिपी शेयर करने जा रहे है। यह बनाने में भी काफी आसान है और इन्हें खाकर मेहमान भी खुद को आपकी तारीफ करने से नहीं रोक पाएंगे। तो आइए जानते हैं कच्चे आलू की इस रेसिपी को बनाने का तरीका...

कच्चे आलू के स्नैक्स सामग्री

मीडियम साइज के कच्चे आलू– 4 या 5

कॉर्न स्टार्च– 2 चम्मच

मैदा– 2 चम्मच

बारीक कटी हरी मिर्च– 2 या 3

बारीक कटा हरा धनिया

नमक स्वादानुसार

ऐसे बनाकर करें तैयार

आलू के स्नैक्स बनाने के लिए आलू को छील लें और इसको पानी में ही ग्रेट करें। इससे यह काफी क्रिस्पी बनेगा स्टार्च नहीं होगा। सबसे पहले आलू को अच्छे से धो लें। फिर दो तीन पानी से धो कर साफ कर लें। इस तरीके से ग्रेट किए हुए आलू से सारा स्टार्च साफ हो जाएगा। इसके बाद ग्रेट किए हुए आलू में सारे मसाले मिक्स कर लें। आप चाहें तो अपने हिसाब से चिली फ्लेक्स भी डाल सकते हैं। फिर इसमें एक चम्मच मैदा और कॉर्न स्टार्च मिलाकर थोड़ी देर के लिए रख दें। लेकिन अगर आपको यह ज्यादा गीला लग रहा है, तो आप इसमें थोड़ा और मैदा व स्टार्च दोनों बराबर मात्रा में मिला दें। फिर अपनी पसंद का शेप देकर इनको डीप फ्राई कर लें। इस दौरान ध्यान रखें कि आपको इन्हें पहले लो फ्लेम में पकाना है।

संक्षिप्त



रॉकवेल ऑटोमेशन के चेन्नई प्लांट्स से सेमीकंडक्टर जैसे अहम सेक्टर को सप्लाई : साहनी

वैश्विक विनिर्माण क्षेत्र में भारत की स्थिति तेजी से बदल रही है और देश वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। रॉकवेल ऑटोमेशन इंडिया के प्रबंध निदेशक दिलीप साहनी ने बोस्टन में 16 से 19 नवंबर तक आयोजित 'रॉकवेल ऑटोमेशन फेयर' के मौके पर 'पीटीआई–भाषा' से यह बात कही। 'रॉकवेल ऑटोमेशन फेयर' कंपनी का वार्षिक औद्योगिक परिचालन एवं स्मार्ट विनिर्माण कार्यक्रम है। भारत को विनिर्माण केंद्र के रूप में विकसित करने की रॉकवेल की योजना के बारे में पूछे जाने पर साहनी ने कहा कि वैश्विक विनिर्माण क्षेत्र में भारत की स्थिति काफी तेजी से बढ़ रही है। उन्होंने कहा, ''भारत में नए उद्योगों को विकसित और विस्तारित होते देखा जा रहा है, जो वैश्विक मूल्य शृंखलाओं के साथ काफी हद तक जुड़ रहे हैं। ये सभी बहुत ही उत्साहजनक संकेत हैं।'' साहनी ने कहा, ''अब दुनिया भर में लोग काफी हद तक यह मानते हैं कि भारत लगातार विकास कर रहा है।'' साहनी ने कहा कि रॉकवेल ऑटोमेशन पिछले 43 वर्षों से भारत में मौजूद है और इस दौरान कंपनी ने उल्लेखनीय विस्तार किया है। उन्होंने कहा, ''पिछले 10 वर्षों में कंपनी के कर्मचारियों की संख्या करीब 1,000 से बढ़कर लगभग 5,000 हो गई है। कंपनी के पास अब कई अहम क्षमताएं हैं और विनिर्माण गतिविधियां भी इसमें शामिल हो गई हैं।'' साहनी ने कहा कि चेन्नई में कंपनी की तीन कारखाने हैं, जो उसकी वैश्विक एकीकृत आपूर्ति शृंखला का हिस्सा हैं। इनमें तैयार उत्पादों का इस्तेमाल सेमीकंडक्टर जैसे महत्वपूर्ण उद्योगों में हो रहा है।

अदाणी एनर्जी सॉल्यूशंस को पश्चिम बंगाल में मिला 2500 मेगावाट ग्रीन एनर्जी सप्लाई का बड़ा ऑर्डर

अदाणी एनर्जी सॉल्यूशंस लिमिटेड (एईएसएल) ने शनिवार को कहा कि उसकी पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी कंपनी पावरपल्स ट्रेडिंग सॉल्यूशंस लिमिटेड (पीटीएसएल) को पश्चिम बंगाल में नवीकरणीय ऊर्जा की आपूर्ति करने का ठेका मिला है। इस परियोजना के तहत एईएसएल पश्चिम बंगाल की बिजली वितरण कंपनी डब्ल्यूबीएसईडीसीएल को 25 वर्षों के लिए 2,500 मेगावाट तक नवीकरणीय ऊर्जा की आपूर्ति करेगी। एईएसएल ने एक बयान में कहा कि पश्चिम बंगाल राज्य बिजली वितरण कंपनी लिमिटेड (डब्ल्यूबीएसईडीसीएल) से मिला आवंटन पत्र (एलओए) 25 वर्षों के लिए 24 घंटे 1,750 मेगावाट नवीकरणीय ऊर्जा की आपूर्ति के लिए है। इस एलओए में 750 मेगावाट का अतिरिक्त क्षमता का विकल्प भी शामिल है, जिसका उपयोग करने पर कुल अनुबंधित क्षमता 2,500 मेगावाट हो जाएगी। बयान में कहा गया कि यह ठेका एक प्रतिस्पर्धी बोली प्रक्रिया के बाद मिला है और 1,750 मेगावाट क्षमता के लिए बिजली आपूर्ति एक जुलाई, 2028 से शुरू होने की योजना है। एईएसएल के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) कंदर्प पटेल ने कहा, 24 घंटे नवीकरणीय बिजली भारत के ऊर्जा परिवर्तन के लिए अहम होगी, जो नवीकरणीय ऊर्जा की स्थिरता और पारेषण प्रणालियों के बेहतर उपयोग को जोड़ती है। यह बड़ा ऑर्डर बड़े पैमाने पर ऊर्जा समाधान देने की हमारी प्रतिबद्धता को मजबूत करता है और हमें पश्चिम बंगाल की दीर्घकालिक टिकाऊ बिजली जरूरतों को पूरा करने में डब्ल्यूबीएसईडीसीएल के साथ साझेदारी करने का अवसर देता है।

भारत और फिनलैंड स्टार्टअप के जरिए बढ़ाएंगे आर्थिक साझेदारी : राजदूत

भारत में फिनलैंड के राजदूत मिक्को किविकोस्की ने कहा कि भारत और फिनलैंड अपने स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के बीच संबंधों को मजबूत करके और आपसी निवेश को बढ़ावा देकर आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना चाहते हैं। किविकोस्की ने पीटीआई–भाषा से कहा, हम भारतीय स्टार्टअप क्षेत्र से जुड़े लोगों के साथ अधिक जुड़ना चाहते हैं। निश्चित रूप से यह हमारे देशों के बीच आर्थिक सहयोग को आगे बढ़ाने के बारे में है। यहां हम स्टार्टअप क्षेत्र और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को उस सहयोग के एक अहम हिस्से के रूप में देखते हैं। राजदूत शुक्रवार को नयी दिल्ली स्थित फिनलैंड के दूतावास में आयोजित एक अनूठे स्टार्टअप कार्यक्रम में बोल रहे थे। इसमें फिनलैंड की शीतकालीन तैराकी की परंपरा से प्रेरित होकर उद्यमियों ने बर्फ जैसे ठंडे पानी के पूल में उतरकर अपने व्यावसायिक विचार पेश किए। किविकोस्की ने कहा, फिनलैंड में इस तरह के आयोजनों की काफी लंबी परंपरा रही है। फिनलैंड के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति की यात्राओं तथा दोनों देशों के नेताओं के बीच हुई बैठकों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा, फिनलैंड और भारत के बीच संवाद और जुड़ाव के मामले में यह साल रिकॉर्ड स्तर पर रहा है। राजदूत ने कहा कि मार्च में फिनलैंड के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर स्टब की भारत की राजकीय यात्रा के दौरान दोनों पक्ष अपने द्विपक्षीय संबंधों को डिजिटलीकरण और सतत विकास में रणनीतिक साझेदारी के स्तर तक ले जाने पर सहमत हुए थे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने फरवरी में नयी दिल्ली में एआई इम्पैक्ट समिट के मौके पर और मई में ओस्लो में तीसरे भारत–नॉर्डिक शिखर सम्मेलन के मौके पर फिनलैंड के अपने समकक्ष पेटेरी ओर्पो से मुलाकात की थी। किविकोस्की ने गर्मियों के दौरान भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर और वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल की फिनलैंड यात्राओं का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा, जब हिंद–प्रशांत क्षेत्र की बात आती है, तो हम भारत को एक भरोसेमंद साझेदार के रूप में देखते हैं। राजदूत ने कहा कि भारत–फिनलैंड संबंध तेजी से पारंपरिक व्यापार से आगे बढ़कर एक ऐसी साझेदारी की ओर जा रहे हैं, जिसमें निवेश और लोगों के बीच आपसी संपर्क शामिल है। उन्होंने कहा, ज्यादा से ज्यादा फिनलैंड की कंपनियां भारतीय बाजार में आ रही हैं और ज्यादा से ज्यादा भारतीय कंपनियां फिनलैंड के बाजार में जा रही हैं। निश्चित रूप से हमें पूरा भरोसा है कि यह गतिशीलता भविष्य में भी जारी रहेगी।

सूर्यकुमार की वापसी के रास्ते बंद!

भारतीय टीम के पूर्व कप्तान सूर्यकुमार यादव राष्ट्रीय टीम में वापसी की राह देख रहे हैं। सूर्यकुमार फिलहाल घरेलू टी20 टूर्नामेंट सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। हालांकि, उनकी उम्मीदों को झटका लगा है क्योंकि बीसीसीआई सूत्र के अनुसार, सूर्यकुमार फिलहाल चयन योजना का हिस्सा नहीं हैं।

नई दिल्ली। भारत को अपनी कप्तानी में टी20 विश्व कप का खिताब दिलाने वाले सूर्यकुमार यादव राष्ट्रीय टीम में वापसी की जुगत में लगे हुए हैं। सूर्यकुमार की वापसी की राह हालांकि मुश्किल नजर आ रही है। न्यूज एजेंसी एएनआई के अनुसार, भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के सूत्र के मुताबिक, सूर्यकुमार यादव अब चयनकर्ताओं की योजनाओं का हिस्सा नहीं हैं। घरेलू क्रिकेट में लगातार अच्छा प्रदर्शन करने के बावजूद फिलहाल भारतीय टीम में उनके लिए जगह नहीं बन पा रही है।

सूर्यकुमार की वापसी पर क्या आया अपडेट

बीसीसीआई के सूत्र ने कहा, श्सूर्यकुमार फिलहाल हमारी चयन योजनाओं का हिस्सा नहीं हैं। हम तो अभी तक सफेद गेंद के क्रिकेट में यशस्वी जायसवाल जैसे युवा खिलाड़ी के लिए भी जगह नहीं बना पाए हैं।श सूत्र ने आगे कहा कि सूर्यकुमार यादव कड़ी मेहनत कर रहे हैं और लिस्ट ए क्रिकेट में अच्छा प्रदर्शन भी कर रहे हैं, लेकिन मौजूदा भारतीय टीम के संयोजन में उन्हें शामिल करना मुश्किल है। सूत्र ने कहा, हां, सूर्यकुमार कड़ी मेहनत कर रहे हैं और लिस्ट ए क्रिकेट में अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। हालांकि, सवाल यह है कि मौजूदा भारतीय टीम में हम उन्हें कहां फिट कर सकते हैं। फिलहाल उनके लिए कोई जगह उपलब्ध नहीं है। हम सफेद गेंद के क्रिकेट में यशस्वी जायसवाल जैसे युवा खिलाड़ी को भी जगह नहीं दे पा रहे हैं, तो मौजूदा टीम में सूर्यकुमार



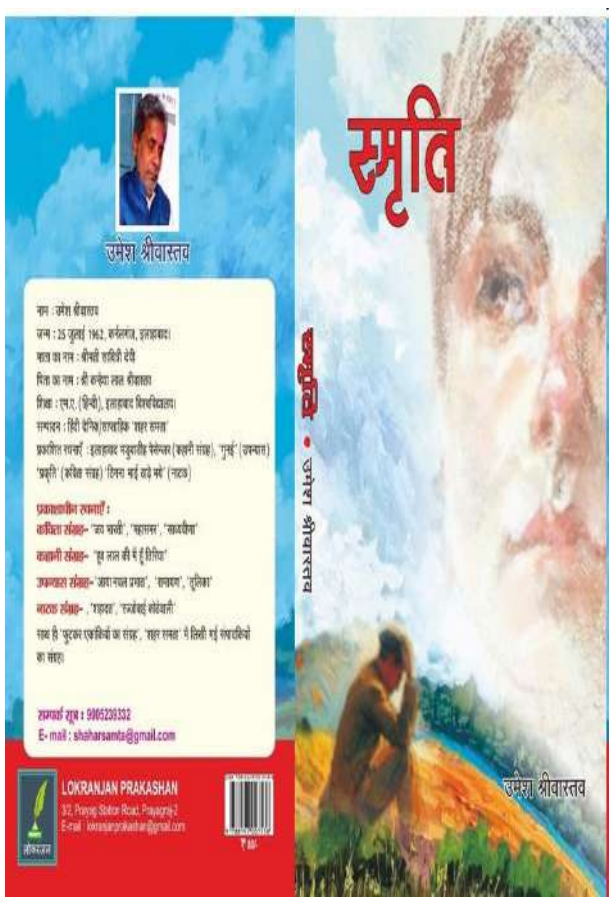
को कहां फिट करेंगे? फिलहाल हम उन्हें टीम में शामिल करने पर विचार नहीं कर रहे हैं।

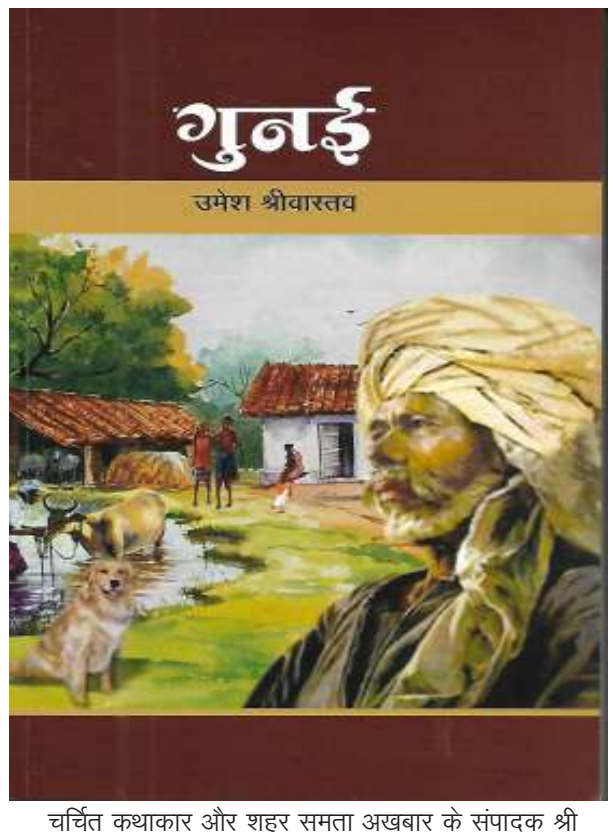
घरेलू क्रिकेट में दम दिखा रहे सूर्यकुमार

मालूम हो कि सूर्यकुमार यादव ने 2026 टी20 विश्व कप में भारतीय टीम की कप्तानी की थी और टीम को लगातार दूसरी बार टी20 विश्व कप का खिताब दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी। हालांकि, आईपीएल के बाद उन्हें टी20 अंतरराष्ट्रीय टीम से बाहर कर दिया गया और उनकी जगह श्रेयस अय्यर को नया कप्तान नियुक्त किया गया। दूसरी ओर, सूर्यकुमार यादव इन दिनों सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी 2026–27 में मुंबई की कप्तानी करते हुए शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने 14 नवंबर को हैदराबाद के खिलाफ मुकाबले में महज 21 गेंदों पर नाबाद 60 रन की तूफानी पारी खेली थी। उनकी इस पारी में छह चौके और पांच छक्के शामिल थे। उन्होंने महज 15 गेंदों में अपना अर्धशतक पूरा किया था। सूर्यकुमार की इस पारी की बदौलत मुंबई ने 173 रन का लक्ष्य सात विकेट से हासिल कर लिया था।

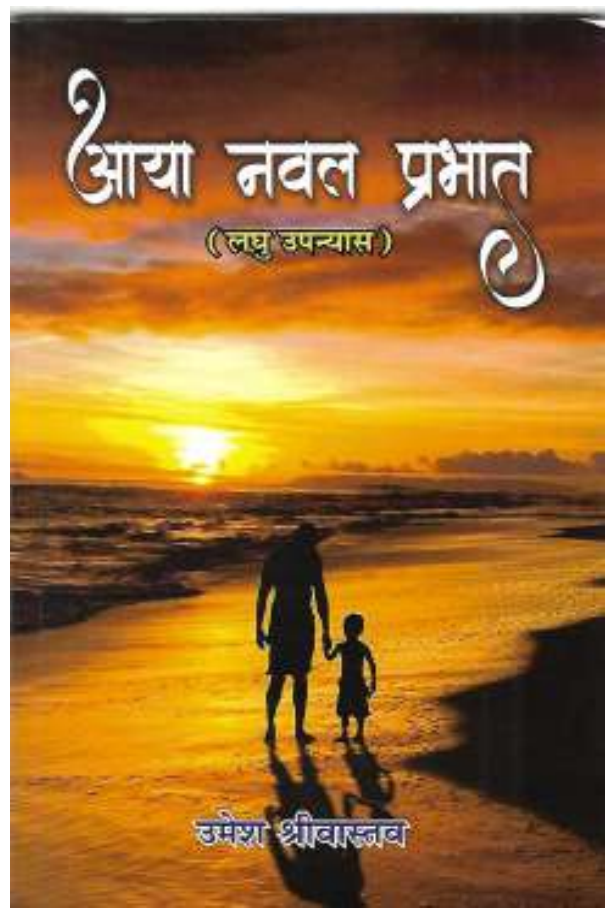
कच्चे तेल ने बिगाड़ा खेल, भारत को लगा 19 अरब डॉलर का बड़ा झटका

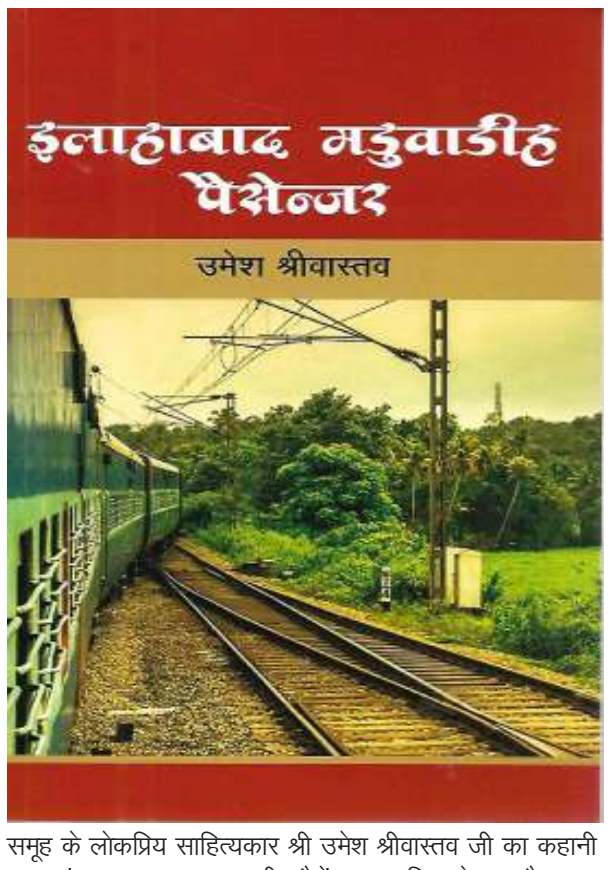
सोचिए आप पेट्रोल पंप पर गाड़ी में तेल भरवाने जाते हैं और आपको लगता है कि तेल की कीमतों का सीधा असर सिर्फ आपकी जेब पर पड़ता है। लेकिन जरा सोचिए कि अगर अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत अचानक बढ़ जाए तो इसका असर पूरे देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ सकता है। भारत के साथ कुछ ऐसा ही हुआ है। अक्टूबर में भारत का कच्चा तेल आयात बिल 88: बढ़कर 19.5 अरब डॉलर यानी लगभग 19.5 बिलियन डॉलर पर पहुंच गया है। यह बढ़ोतरी इसलिए भी बढ़ी है क्योंकि अप्रैल से सितंबर के बीच कच्चे तेल के आयात बिल में करीब 46: का इजाफा हुआ है। पेट्रोलियम मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक अक्टूबर में भारत का कच्चे तेल का आयात बिल सालाना आधार पर 88: बढ़कर 19.5 अरब डॉलर हो गया। इसकी सबसे बड़ी वजह रही अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में तेज उछाल। अमेरिकी एनर्जी इंफॉर्मेशन एडमिनिस्ट्रेशन यानी कि ईआईए के मुताबिक अक्टूबर में ब्रैंड क्रूट की औसत कीमत 123.93 प्रति बैरल ली। मार्च 2012 के बाद की ब्रैंड क्रूट का सबसे ऊंचा मासिक औसत था। अब इसकी तुलना पिछले साल अक्टूबर से कर लेते हैं। अक्टूबर 2025 में ब्रैंड क्रूट की औसत कीमत सिर्फ 64.54 प्रति बैरल थी। यानी एक साल में कच्चे तेल की कीमत लगभग दोगुनी होगी। इसका सीधा असर भारत के आयात बिल पर पड़ा। अब समझते हैं कि तेल की कीमतें इतनी ऊपर क्यों पहुंची। दरअसल युद्ध शुरू होने और स्टेट ऑफ हार्मूस के लगभग बंद होने की स्थिति के बाद से अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें ऊंची बनी हुई थी। मार्च से अक्टूबर के बीच ब्रैंड क्रूट की औसत कीमत +103.23 प्रति बैरल रही। हारमूस दुनिया के सबसे अहम तेल परिवहन रास्तों में से एक है। खाड़ी देशों से निकलने वाले तेल के बड़े हिस्से की सप्लाई इसी रास्ते से होती है। ऐसे में यहां तनाव बढ़ने का मतलब है कि दुनिया में तेल की सप्लाई प्रभावित होने का खतरा बढ़ जाता है। अक्टूबर में अमेरिका के मिड टर्म चुनाव से पहले तेल की कीमतों में और तेजी आई। बाजार में आशंका थी कि 3 नवंबर को चुनाव के बाद अमेरिका ईरान पर फिर से हमले शुरू कर सकता है। इससे तेल की सप्लाई रुकने का डर बढ़ गया। इसी आशंका के चलते तेल रिफाइनरी कंपनियों ने जरूरत से पहले ही ज्यादा कच्चा तेल खरीदना शुरू कर दिया ताकि भविष्य में सप्लाई की दिक्कत होने पर उनके पास पर्याप्त स्टॉक रहे। तो भारत का आयात बिल बढ़ने की दूसरी वजह सिर्फ तेल की कीमत नहीं थी बल्कि आयात की मात्रा भी बढ़ी। अक्टूबर में भारत ने पिछले साल के मुकाबले 11: ज्यादा कच्चा तेल आयात किया। जबकि अप्रैल से सितंबर के बीच आयात की मात्रा में सिर्फ 1: की बढ़ोतरी हुई थी। यानी अक्टूबर में भारत को तेल खरीदने के लिए ज्यादा कीमत भी चुकानी पड़ी और ज्यादा मात्रा में तेल भी खरीदना पड़ा। तेल की सप्लाई के लिए हारमूस के रास्ते से आने वाले जहाजों की आवाजाही भी बढ़ी। कई टैंकर फॉरेस्ट की खाड़ी के लोडिंग सेंटर से निकलकर ओमान की खाड़ी तक पहुंचे। वहां एक जहाज से दूसरे जहाज में तेल ट्रांसफर करके आगे ग्राहकों तक पहुंचाया गया। रिपोर्ट के मुताबिक ईरान के हमलों का खतरा बढ़ने के बावजूद कई टैंकरों ने अपने एआईएस ट्रांसपोर्टर बंद करके इस रास्ते में सफर किया। एआईएस एक ऐसी तकनीक है जिससे जहाज की लोकेशन और उसकी आवाजाही का पता चलता है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि अमेरिकी मिड टर्म चुनाव से पहले ईरान की दिलचस्पी तेल की सप्लाई सीमित रखने और अंतरराष्ट्रीय बाजार में और अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतें बढ़ाने में थी। लेकिन फिर 3 नवंबर को अमेरिकी मिड ट्रंप चुनाव के नतीजे आए। इन नतीजों में डोनाल्ड ट्रंप की रिपब्लिकन पार्टी को बड़ा झटका लगा।



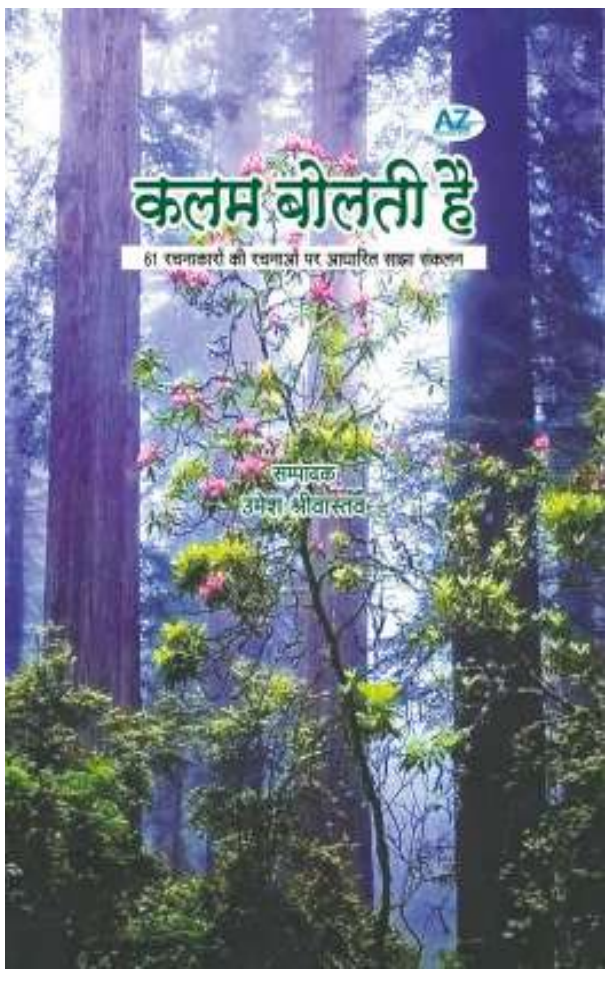


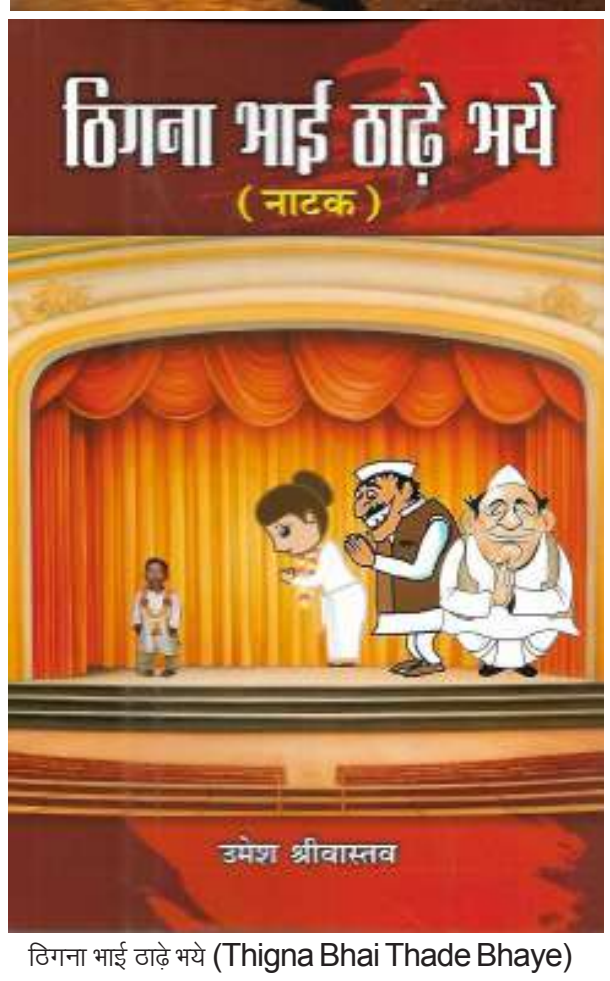
चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित





समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।





ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

गैंगस्टर गोल्डी बराड़ पर शिकंजा कसा: FBI की टॉप 10 मोस्ट वांटेड लिस्ट में शामिल, गिरफ्तारी पर रखा गया 1 मिलियन डॉलर का इनाम!

अंतरराष्ट्रीय अपराध सिंडिकेट के खिलाफ अमेरिकी जांच एजेंसी फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन ने बड़ा कदम उठाते हुए कुख्यात गैंगस्टर सतिंदरजीत सिंह उर्फ 'गोल्डी बराड़' को अपनी टॉप 10 मोस्ट वांटेड (सबसे ज्यादा वांछित) अपराधियों की सूची में शामिल कर लिया है। गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई के इस बेहद करीबी सहयोगी की गिरफ्तारी या ठिकाने के बारे में पुख्ता जानकारी देने वाले को 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर (लगभग 8.5 करोड़ रुपये) तक का भारी–भरकम इनाम देने की घोषणा की गई है। FBI के एक नोटिस के अनुसार, वह अमेरिका और कनाडा में हिंसक आपराधिक गतिविधियों को अंजाम देने वाले एक अंतरराष्ट्रीय संगठित अपराध गिरोह (ऑर्गेनाइज्ड क्राइम सिंडिकेट) का नेतृत्व करने के आरोप में



वांछित है। उसे 'टॉप 10 मोस्ट वांटेड' सूची में इसलिए रखा गया है क्योंकि वह लॉरेंस बिश्नोई संगठित अपराध समूह (OCG) के उत्तरी अमेरिकी ऑपरेशंस का नेतृत्व करता है। इस समूह पर राजनीतिक और धार्मिक हस्तियों की हत्या, गोलीबारी, कत्ल, अपहरण, जबरन वसूली, मारपीट, मानव तस्करी, और नशीले पदार्थों व हथियारों की तस्करी में शामिल होने का आरोप है।

गोल्डी बराड़ को FBI की टॉप 10 मोस्ट वांटेड सूची में क्यों शामिल किया गया?

FBI लॉस एंजिल्स के असिस्टेंट डायरेक्टर इन–चार्ज पैट्रिक ग्रांडी ने बताया कि सिंह को इस सूची में इसलिए शामिल किया गया है क्योंकि वह हिंसक अपराधों में शामिल रहा है और सार्वजनिक सुरक्षा के लिए खतरा है। ग्रांडी ने कहा, ष्सतिंदरजीत सिंह को उसकी हिंसक प्रवृत्ति और उन विभिन्न अपराधों के आधार पर थ्ठप् की कुख्यात श्टॉप 10 मोस्ट वांटेडश सूची में जोड़ा गया है, जिनके लिए उस पर आरोप लगे हैं। ग्रांडी ने आगे कहा, ष्यह सूची उन लोगों के लिए है जो फरार हैं और जिनके बारे में थ्ठप् का मानना घ्है कि उन्हें जल्द से जल्द पकड़ा जाना चाहिए, ताकि वे और लोगों को अपना शिकार न बना सकें। सिंह जैसे हिंसक अपराधियों के मामले में यह और भी जरूरी हो जाता है। हम तब तक संतुष्ट नहीं होंगे जब तक सिंह को पकड़ नहीं लिया जाता और उसके उन कथित अपराधों के लिए अमेरिकी अदालत में मुकदमा नहीं चलाया जाता, जिनका असर अमेरिका और दुनिया भर के नागरिकों पर पड़ा है। नोटिस के अनुसार, लॉस एंजिल्स की अमेरिकी डिस्ट्रिक्ट कोर्ट ने 1 जुलाई को सिंह के खिलाफ एक फेडरल अरेस्ट वारंट (गिरफ्तारी वारंट) जारी किया था। उस पर रैकेटीयर इन्फ्लुएंस्ड एंड करप्ट ऑर्गेनाइजेशन्स साजिश, जबरन वसूली के जरिए व्यापार में बाधा डालने की साजिश और कोशिश, तथा नशीले पदार्थों को रखने और उन्हें बांटने की साजिश रचने के आरोप हैं।

क्या गोल्डी बराड़, लॉरेंस बिश्नोई का बचपन का साथी है?

FBI का आरोप है कि लॉरेंस बिश्नोई का बचपन का साथी सिंह, अमेरिका और कनाडा में इस गिरोह के कामकाज को संभालता था। वह टारगेट किलिंग (चुनिंदा हत्याओं), गोलीबारी, अपहरण, मारपीट, जबरन वसूली और नशीले पदार्थों की तस्करी जैसी वारदातों को अंजाम देने के निर्देश देता था। नोटिस के अनुसार, बिश्नोई का संगठित अपराध गिरोह (ब्ळ्ळ) भारत से संचालित होता है और इसके हजारों सदस्य व सहयोगी अमेरिका, कनाडा, यूनाइटेड किंगडम, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया में फैले हुए हैं। ऑपरेशन हार्ड बॉल के तहत सिंह के कई कथित साथियों को गिरफ्तार किया गया है। यह संगठित अपराध सिंडिकेट्स के खिलाफ कई सालों से चल रही एक संघीय जांच है, जो जबरन वसूली, टारगेट किलिंग और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नशीले पदार्थों की तस्करी में शामिल हैं। FBI ने सिंह को हथियारबंद और खतरनाक बताया है और लोगों को चेतावनी दी है कि वे उसके करीब न जाएं। एजेंसी ने अपील की है कि अगर किसी को भी उसके ठिकाने के बारे में कोई जानकारी हो, तो वे अपने स्थानीय थ्ठप् कार्यालय, नजदीकी अमेरिकी दूतावास या वाणिज्य दूतावास से संपर्क करें, या उनकी आधिकारिक वेबसाइट के जरिए जानकारी दें। साथ ही यह भरोसा भी दिलाया गया है कि दी गई सभी जानकारी पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी।

ट्रंप प्रशासन के टीवी विज्ञापनों पर अमेरिकी संघीय अदालत ने नहीं लगाई दीर्घकालिक रोक

अमेरिका की एक संघीय अदालत ने देश के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व वाले प्रशासन के उन विवादास्पद राजनीतिक विज्ञापनों पर दीर्घकालिक रोक लगाने से इनकार कर दिया है जिनका खर्च करदाताओं के पैसे से उठाया गया था। अब इन विज्ञापनों के भविष्य का फैसला एक अन्य न्यायाधीश के हाथ में है जो इसी तरह के एक मामले की सुनवाई कर रहे हैं। न्यूयॉर्क में अमेरिकी जिला न्यायाधीश जेनिफर एल. रोशोन ने शुक्रवार को कहा कि मुकदमा दायर करने वाले संगठनों का गठबंधन यह बात ठोस तरीके से साबित नहीं कर पाया कि नवंबर में मध्यावधि चुनाव समाप्त होने के बाद भी इन विज्ञापनों से उन्हें ''तत्काल और अपूरणीय क्षति'' हो रही है। इस गठबंधन में सरकार के कामकाज पर नजर रखने वाला संगठन 'कॉमन कॉज' भी शामिल है। रोशोन ने अदालत में दाखिल एक दस्तावेज में कहा, ''इस मामले में पहले अस्थायी रोक लगाने के अनुरोधों के पीछे मुख्य वजह तीन नवंबर, 2026 को होने वाले मध्यावधि और राज्य चुनाव थे। ये चुनाव अब संपन्न हो चुके हैं।'' अदालत का यह फैसला ट्रंप प्रशासन के लिए एक सीमित राहत की बात है। इस बीच, इसी तरह के एक अन्य मामले की सुनवाई वाशिंगटन डीसी में की जा रही है। उस मामले में डेमोक्रेटिक नेशनल कमेटी (डीएनसी) ने अदालत से ट्रंप प्रशासन को इन विज्ञापनों को तैयार करने, वितरित करने या प्रसारित करने से रोकने के लिए अंतरिम आदेश जारी करने का अनुरोध किया है। न्यायाधीश ने इस सप्ताह की शुरुआत में मामले पर सुनवाई की थी लेकिन उन्होंने अभी फैसला नहीं सुनाया है। शुक्रवार को अदालत ने ट्रंप प्रशासन के उन टेलीविजन विज्ञापनों के संबंध में फैसला सुनाया, जिनका प्रसारण सितंबर में शुरू हुआ था। इन विज्ञापनों का खर्च कम से कम आंशिक रूप से अमेरिकी आंतरिक सुरक्षा विभाग के दो करोड़ अमेरिकी डॉलर के एक अनुबंध के तहत उठाया गया था। याचिकाकर्ताओं ने दलील दी है कि ये विज्ञापन सरकारी खर्च पर किया गया अवैध प्रचार थे, जिनका उद्देश्य चुनाव से कुछ सप्ताह पहले राष्ट्रपति के चुनाव प्रचार के संदेश को बढ़ावा देना था। हालांकि, अमेरिका के राष्ट्रपति के आधिकारिक आवास एवं कार्यालय 'व्हाइट हाउस' ने इन विज्ञापनों का बचाव करते हुए इन्हें जनहित में जारी संदेश बताया था।

डोनाल्ड ट्रंप का दावा: अगले 10 साल में परमाणु हथियारों के मामले में बराबरी कर लेगा चीन

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मुलाकात के एक दिन बाद कहा कि चीन बहुत तेजी से परमाणु हथियारों का जखीरा बढ़ा रहा है। इस मुलाकात के दौरान तीनों देशों ने परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकने के लिए बातचीत करने पर सहमति जताई थी। रूस और अमेरिका के पास हजारों परमाणु हथियार हैं और इस मामले में दोनों देश दुनिया में सबसे आगे हैं। वहीं, चीन भी अपने परमाणु हथियारों का जखीरा तेजी से बढ़ा रहा है। चीन की बढ़ती सैन्य ताकत पर अपनी वार्षिक समीक्षा में अमेरिकी रक्षा मंत्रालय के मुख्यालय 'पेंटागन' ने कहा कि 2024 के अंत तक चीन के पास 600 से कुछ अधिक परमाणु हथियार थे, लेकिन जिस गति से वह इनकी संख्या बढ़ा रहा है, उसे देखते हुए 2030 तक उसके पास 1,000 से अधिक परमाणु हथियार होने की संभावना है। ट्रंप ने शुक्रवार को 'व्हाइट हाउस' (अमेरिका के राष्ट्रपति का आधिकारिक आवास एवं कार्यालय) में एक संवाददाता सम्मेलन के दौरान चीन के परमाणु हथियारों के बढ़ते जखीरे का जिक्र करते हुए कहा, ''वे अगले 10 साल में हमारी बराबरी कर लेंगे। वे बहुत तेजी से परमाणु हथियार बना रहे हैं और उनके पास पहले से ही बड़ी संख्या में ऐसे हथियार हैं।'' ट्रंप ने बृहस्पतिवार को चीन के दक्षिणी शहर शेनझेन में शी और पुतिन के साथ हुई शिखर बैठक के बाद इस बारे में पहली बार सार्वजनिक टिप्पणी की। चीन और रूस को लंबे समय से अमेरिका का प्रतिद्वंद्वी माना जाता रहा है। ट्रंप के साथ मौजूद अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने शुक्रवार को पत्रकारों से कहा कि परमाणु हथियारों से संपन्न इन तीनों देशों के बीच बातचीत बेहद जरूरी है। रुबियो ने कहा, ''दुनिया के अधिकतर परमाणु हथियार इन तीन देशों के पास हैं। यह सोचना कि इन तीनों देशों के नेताओं को नियमित रूप से बातचीत नहीं करनी चाहिए, न केवल बेतुका है बल्कि खतरनाक भी है।'' त्रिपक्षीय बैठक के बाद तीनों नेताओं ने एक संयुक्त बयान जारी कर कहा कि वे ''परमाणु हथियारों से जुड़े जोखिमों को कम करने और परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकने के लिए बातचीत करेंगे।''

ICJ ने म्यांमा को ठहराया नरसंहार का दोषी, रोहिंग्या शरणार्थियों ने फैसले को बताया उम्मीद की किरण

बांग्लादेश के कॉक्स बाजार स्थित विशाल शिविर में सैकड़ों रोहिंग्या शरणार्थी एक बड़ी स्क्रीन के सामने बैठकर नीदरलैंड से आ रही खबरें देख रहे थे, जहां संयुक्त राष्ट्र की शीर्ष अदालत ने फैसला सुनाया कि म्यांमा ने 2017 के एक क्रूर सैन्य अभियान के दौरान रोहिंग्या अल्पसंख्यकों का नरसंहार किया था। कई लोगों के लिए बृहस्पतिवार का आया यह ऐतिहासिक फैसला एक ''छोटी जीत'' जैसा था, जिसने उन्हें यह उम्मीद जगाई है कि एक दिन वे बांग्लादेश की सीमा के पार म्यांमा स्थित अपने घरों में सुरक्षित लौट सकेंगे। कुछ लोगों ने कहा कि वे केवल तभी ''पूरी तरह संतुष्ट'' होंगे। यह एक ऐतिहासिक फैसला था, जिसमें देश के जातीय रोहिंग्या समुदाय के खिलाफ इस अपराध के लिए म्यांमा को जिम्मेदार ठहराया गया। यह पहली बार है जब अदालत ने किसी राष्ट्र को नरसंहार का दोषी ठहराया है। हेग स्थित अंतरराष्ट्रीय न्यायालय ने म्यांमा की सैन्य–समर्थित सरकार को रोहिंग्या समुदाय को सुरक्षित घर लौटने की अनुमति देने, रोहिंग्या मुसलमानों को मुआवजा देने तथा नरसंहार करने के संदिग्ध लोगों पर मुकदमा चलाने का भी आदेश दिया। अदालत के फैसले को किस हद तक लागू किया जा सकेगा, यह देखा जाना बाकी है।

सैनिकों को लेकर भागा अमेरिका, कुवैत पर हमले के बाद क्या हुआ ?

कुवैत में हमला ईरान ने किया है वो बेहद खतरनाक है और इसमें कुवैत के अली अल सलेम एयरबेस पर ईरान ने ड्रोन अटैक किया था। दरअसल अली अल सलेम अमेरिकी एयरबेस पर ईरान ने वनवे अटैक ड्रोन से निशाना बनाने का दावा किया था। जिससे वहां पर तैनात कई अमेरिकी फौजी बुरी तरह जख्मी हुए हैं। इस कदर जख्मी कि उन घायल अमेरिकी सैनिकों को लेकर एक ब17 ए ग्लोब मास्टर प्लेन कुवैत से जर्मनी के लिए रवाना हुआ। यह बड़ा हवाई जहाज घायल फौजियों को लेकर जर्मनी के रामस्टीन एयरबेस पर उतरा। हालांकि इस तरह के दावों को लेकर अमेरिका और ईरान दोनों से जुड़े सोर्सेस आमने–सामने हैं। ईरानियन आर्मी ग्राउंड फोर्सेस ने कुवैत में मौजूद अली अल सलेम बेस को निशाना बनाया है। शुरुआती रिपोर्ट में कहा गया कि इन हमलों में कई अमेरिकी फौजी जख्मी हो गए हैं। अब दावा किया जा रहा है कि फ्लाइट ट्रैकिंग डाटा बताता है कि अमेरिका का ब17। ग्लोब मास्टर प्लेन कुवैत से जर्मनी के रामस्टीन एयरबेस के लिए रवाना हुआ था। लेकिन इन दावों में एक बड़ा मोड़ तब आया जब यूएस सकम ने इस तरह की खबरों को खारिज



कर दिया। सकम ने सोशल मीडिया के जरिए बताया कि इस हफ्ते ईरान के हमले में कोई भी अमेरिकी फौजी जख्मी नहीं हुआ है। सभी अमेरिकी फौजी महफूज़ हैं और उनका पूरा हिसाब रखा जा रहा है। अमेरिकी डिफेंस सेंटर जो मिडिल ईस्ट से ऑपरेट करता है सेंट कॉम उसका दावा है कि ईरान और उससे जुड़े हैंडल झूठी खबरें फैला रहे हैं। लेकिन कुवैत और बहरीन के जिन अमेरिकन बेससेस पर हमला हुआ है, उसे ईरान ने डंकी की चोट पर काबिले कुबूल किया है और दुनिया को बता दिया है कि हां हमने मारा है। ईरान में रह रहे भारतीय स्कॉलर और मिडिल ईस्ट एक्सपर्ट मौलाना जमीर अब्बास जाफरी का कहना है कि ईरान के ऑफिशियल न्यूज़ चौनल्स ने बाकायदा ऐलान किया है कि कुवैत और बहरीन के दोनों बेसिस और अमेरिकन अर्ली वार्निंग रडार सिस्टम को ईरान ने ही टारगेट किया था। इसकी वजूहात भी बताई है ईरान ने। उसका कहना है कि हमने किशम आइलैंड पर दुश्मनों के सर्लिंस ड्रोन पकड़े हैं। इसराइल का एक ड्रोन हमदान में पकड़ा गया है। जमीर अब्बास जाफरी का कहना है कि वो अपने सर्लिंस ईरान में भेजते रहें और ईरान यह सब देखता रहे तो यह मुमकिन नहीं है। अगर तुम हमें आंख दिखाओगे तो यह आंखें हम फोड़ देंगे। आंख यानी ईरान के दुश्मनों का वो रडार सिस्टम जिसके जरिए वो ईरान पर नजर रखते हैं। तो ईरान ने कुवैत पर हमला किया है। वो खुद मान रहा है। मिडिल ईस्ट एक्सपर्ट जमीर अब्बास जाफरी कहते हैं कि ईरान अपने इस एक्शन को बिल्कुल नहीं छिपा रहा है और छिपाने जैसी बात भी नहीं है। दुनिया देख रही है कि ईरान को परेशान किया जा रहा है और जब परेशान करोगे तो हम भी मारेंगे और हर बार मारेंगे। वहीं इस खबर पर सबके अलग–अलग नजरिए हैं। कुछ एक्सपर्ट ब17 की इस उड़ान को मेडिकल एकुएशन यानी घायल सैनिकों को इलाज के लिए ले जाने के सबूत के तौर पर देख रहे हैं। हालांकि सिर्फ फ्लाइट डाटा से यह तस्दीक नहीं की जा सकती कि विमान में कौन सवार था या वह जर्मनी क्यों जा रहा था। अगर देखा जाए तो ट्रिगर्स शुरू हो गए हैं। यानी एक दूसरे को जवाब दिया जा रहा है। तो इसे जंग का आगाज मान लेना चाहिए। एक्सपर्ट कहते हैं कि पहले ईरान ने अरब देशों में मौजूद अमेरिकी एयरबेस पर हमले किए। जिसके चलते अमेरिका ने अपने फौजियों को इसराइल के करीब जॉर्डन में शिफ्ट किया था। तब ईरान ने जॉर्डन में मार दिया था। यह बताने के लिए है कि हमें आपकी क्लियर इंफॉर्मेशन है और आप कहां–कहां चीजें शिफ्ट कर रहे हैं। अब ईरान खुद कुवैत पर हमले का दावा कर रहा है और वहां अमेरिकी फौजियों के जख्मी होने की भी बात कही जा रही है। हाल ही में कुवैत और बहरीन के जिन अमेरिकन बेससेस पर हमला हुआ है उसे ईरान ने डंके की चोट पर काबिल कुबूल किया है और दुनिया को बता दिया है कि हां हमने मारा है।

फिलीपीन में एयर नियुगिनी विमान की आपात स्थिति में उतारा, बाल–बाल बचे 146 लोग

हांगकांग से पापुआ न्यू गिनी जा रहे 'एयर नियुगिनी' के एक विमान को इंजन में आग लगने की आशंका के कारण शनिवार को दक्षिणी फिलीपीन के एक शहर में आपात स्थिति में सुरक्षित उतारा गया। फिलीपीन के विमानन अधिकारियों ने यह जानकारी



दी। अधिकारियों ने बताया कि विमान में 146 यात्री और चालक दल के सदस्य सवार थे। फिलीपीन के नागरिक उड्डयन प्राधिकरण ने बताया कि बोइंग 767–383ईआर विमान के दावाओ अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरने के बाद सभी 137 यात्रियों और चालक दल के नौ सदस्यों को आपातकालीन 'स्लाइड' के जरिए बाहर निकाला गया तथा इनमें से किसी के घायल होने की कोई सूचना नहीं है।

प्राधिकरण के प्रवक्ता एरिक अपोलोनियो ने बताया कि पायलटों को विमान में लगे एक संकेतक से दाहिने इंजन में चिंगारी निकलने या आग लगने की आशंका का पता चला।

इसके बाद उन्होंने सुरक्षा संबंधी प्रक्रियाएं अपनाईं और मध्यरात्रि के कुछ समय बाद दावाओ में विमान को आपात स्थिति में उतारने का अनुरोध किया।

यात्रियों और चालक दल के सदस्यों को हवाई अड्डे के टर्मिनल पर ले जाया गया, जहां उन्हें आवश्यक सहायता उपलब्ध कराई गई और उनके होटल में ठहरने की व्यवस्था की गई। विमान को नुकसान पहुंचने की तत्काल कोई सूचना नहीं है।

डोनाल्ड ट्रंप की नीतियों से गठबंधन कमजोर, हैलिफैक्स सुरक्षा मंच ने वैश्विक नेतृत्व पर जताई चिंता

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नीतियों के कारण वर्षों पुराने गठबंधनों में तनाव पैदा होने का दावा करते हुये एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा मंच के प्रमुख ने चेतावनी दी है कि अमेरिका अब लोकतांत्रिक देशों के नेतृत्वकर्ता के रूप में भरोसेमंद नहीं रह गया है और अन्य देशों से आगे बढ़कर नेतृत्व करने का आग्रह किया।

'हैलिफैक्स अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा मंच' के अध्यक्ष पीटर वैन प्राग ने शुक्रवार को कहा, ''अमेरिका के पूर्वानुमानित नेतृत्वकर्ता नहीं रहने से लोग, संस्थान और देश एक नयी दिशा तलाश रहे हैं। वे ऐसे मार्गदर्शक की तलाश में हैं, जो उन्हें सही रास्ता दिखा सके।''

उन्होंने कहा, ''कोई भी एक देश अमेरिका के प्रभाव की जगह नहीं ले सकता, लेकिन उन आदर्शों को बनाए रखना हमारे ऊपर है।''

शेख हसीना ने ये क्या कर दिया? बांग्लादेश में अचानक कैसे हुए 85 धमाके

भारत की शरण में बैठी बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने साइन करके एक चिट्ठी भिजवाई है। शेख हसीना ने भारत छोड़ने के लिए इस चिट्ठी पर साइन किया है। इस हैरान कर देने वाली घटना के बीच बांग्लादेश में 85 से ज्यादा बम धमाके हो चुके हैं। दरअसल बांग्लादेश में शेख हसीना के गढ़ माने जाने वाले गोपालगंज, काशियानी, तंगीपारा और फिरोजपुर जिलों में जबरदस्त बवाल मच गया है। इन जिलों में बांग्लादेश के प्रधानमंत्री तारिक रहमान की पार्टी बीएनपी के सदस्यों के दफ्तर जलाए जा रहे हैं। हैरानी की बात देखिए कि सिर्फ पार्टी के दफ्तर ही नहीं जलाए जा रहे बल्कि बीएनपी सांसदों के घर भी जला दिए गए। पुलिस स्टेशनों, ग्रामीण बैंकों की शाखाओं और मोहम्मद यूनुस के पैतृक घर को भी जला दिया गया है। मोहम्मद यूनुस तो आपको याद ही होंगे। यह कुछ समय के लिए बांग्लादेश केयरटेकर प्रधानमंत्री रहे। लेकिन उसी छोटे से समय में इनके कहने पर बांग्लादेश के कट्टरपंथियों ने हिंदुओं को दौड़ा–दौड़ा कर मारा। यहां तक कि शेख हसीना के सरकारी आवास और पारिवारिक घर को भी तोड़ दिया गया। शेख हसीना के पिता और बांग्लादेश के संस्थापक नेता मुजबुर रहमान की मूर्तियों को नष्ट कर दिया गया। लेकिन इन लोगों ने जैसा किया था अब सूद समेत वैसा मिल भी रहा है। जो बांग्लादेश कुछ महीनों पहले भारत को धमकी दे रहा था कि शेख हसीना हमें वापस करो। हमें शेख हसीना को फांसी देनी है। आज वही बांग्लादेश भारत से अपील कर रहा है कि शेख हसीना को अपने पास ही रखो। उन्हें बांग्लादेश आने मत दो। इसका कारण यह है कि पूरे बांग्लादेश में शेख हसीना की पार्टी आवामी लीग के हजारों



समर्थक सड़कों पर निकल आए हैं। इनके साथ कपड़ा उद्योग के वो हजारों मजदूर भी शामिल हो गए हैं जिनकी नौकरियां जेनजी सरकार की वजह से चली गई। बहरहाल इसी बीच शेख हसीना के वकील ने नई दिल्ली स्थित बांग्लादेश हाई कमीशन को एक पत्र भेजा है जिस पर शेख हसीना का साइन है। इस लेटर में लिखा गया है कि शेख हसीना भारत छोड़कर दिसंबर में बांग्लादेश आना चाहती हैं। इसके लिए उन्होंने एक नया पासपोर्ट और एक नया राष्ट्रीय पहचान पत्र मांगा था। उसका क्या हुआ? बांग्लादेश हाई कमीशन ने अभी तक इस लेटर का जवाब नहीं दिया है। बांग्लादेश की सड़कों पर अब लाखों बांग्लादेशी बोल रहे हैं कि शेख हसीना को वापस भेजो क्योंकि बांग्लादेश बर्बाद हो चुका है।



प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।